पत्थर

का

योद्धा

इंदु भूषण अरोड़ा

1

ज़ोरान

लगभग नौ सौ वर्ष पुरानी बात है. तलाविया में एक बच्चे का जन्म हुआ. किसी सामान्य शिशु की तुलना में वह शिशु बहुत बड़ा और भारी था. उस भीमकाय शिशु को देख कर उसकी दादी ख़ुशी से चिल्लाई, "अरे देखो तो सही, यह लड़का कितना बड़ा है. इतना बड़ा शिशु मैंने आजतक नहीं देखा. मेरी बात समझ लो, बड़ा हो कर यह संसार का सबसे शक्तिशाली आदमी होगा. यह उतना ही शक्तिशाली होगा जितने शक्तिशाली हमारे ज़ारान देव थे. क्यों न हम इसका नाम ज़ोरान रखें?"

बच्चे के पिता न कहा, “तुम ने ठीक कहा माँ, मेरे बेटे पर अवश्य ही महान ज़ारान की कृपा है. इसका नाम तो ज़ोरान ही होना चाहिये. बहुत अच्छा नाम है.”

ज़ारान का जन्म तलाविया में दो हज़ार वर्ष पहले हुआ था. वह एक महान योद्धा था. उसने कई दैत्यों और दानवों से लड़ाई कर उन्हें पराजित किया था. ज़ारान ने कई बार अपने देश को शत्रुओं के आक्रमण से बचाया था. तलाविया के लोग उसे देवता समान पूजते थे. तलाविया का हर युवक ज़ारान जैसा बहादुर और शक्तिशाली बनने का सपना देखता था. हर पिता चाहता था कि उसका पुत्र ज़ारान जैसा निडर और ताकतवर हो.

नन्हा ज़ोरान बड़ा हुआ. वह ताकतवर लड़का था. चौदह वर्ष की आयु में ही वह खूब लम्बा हो गया था. वह एक बैल की तरह मज़बूत और तगड़ा था. कुल्हाड़ी के एक ही वार से वह एक पेड़ काट सकता था. एक भारी-भरकम भालू से वह निहत्थे ही लड़ सकता था.

ज़ोरान का पिता एक सीधा-सादा चरवाहा था. उसकी इच्छा थी ज़ोरान भी उसकी भांति चरवाहा बने और अपनी भेड़-बकरियों की देखभाल करे. परन्तु ज़ोरान तो सिपाही बनना चाहता था. वह सेना का सिपाही बन, देश के शत्रुओं से लड़ना चाहता था, सुदूर उत्तर में रहने वाले भयानक दैत्यों को द्वंद्व युद्ध में हराना चाहता था, हर शत्रु से अपने देश की रक्षा करना चाहता था. ज़ारान देव की तरह वह भी एक महान योद्धा बनना चाहता था.

अपने बीसवें जन्मदिन के बाद एक दिन, अपने पिता को बताये बिना, वह तलाविया के राजा के सामने उपस्थित हो गया. राजा उसे देख कर बहुत प्रसन्न हुए और बोले, "मेरे बच्चे, तुम्हें तो हमारी सेना का सिपाही होना चाहिये. हमारी सेना को तुम जैसे बहादुर और शक्तिशाली युवक की आवश्यकता है."

"महाराज, मेरे पिता की इच्छा है कि मैं उनकी भेड़-बकरियों की देखभाल करूँ. मैं अपने पिता की आज्ञा का ही पालन करूँगा, मैं उन्हें दुःखी नहीं कर सकता," ज़ोरान ने कहा.

“हम तुम्हारे पिता से बात करेंगे. हमें विश्वास है कि वह हमारा अनुरोध स्वीकार कर लेंगे और तुम्हें सिपाही बनने की अनुमति अवश्य देंगे.” राजा ने कहा.

राजा ने ज़ोरान के पिता को अपने महल में बुलाया. ज़ोरान के पिता राजा का कहा न टाल सके और उन्होंने अपने बेटे को सिपाही बनने की अनुमति दे दी. ज़ोरान की खुशी का ठिकाना न था. वह तलाविया के सेना का एक सिपाही बनने वाला था.

दो वर्षों तक उसने कड़ी मेहनत की. तलवार और धनुष-बाण चलाना सीखा, भाले और गदा से युद्ध करना सीखा. घुड़सवारी करना, रथ चलाना, बिना किसी अस्त्र-शस्त्र के लड़ाई करना, दिन में लड़ना, रात के अँधेरे में लड़ना, सब कुछ उसने पूरी लगन और मेहनत से सीखा.

दो वर्षों के कड़े प्रशिक्षण के बाद वह हर अस्त्र और शस्त्र के साथ लड़ने में पूरी तरह निपुण हो गया था और एक भयंकर योद्धा बन गया था. उसके साथ प्रशिक्षण पाने वाले सब

सैनिक उसका सम्मान करने लगे थे. कई सैनिक तो उससे ईर्षा भी करते थे.

राजा भी उसे देख कर बहुत प्रभावित हुए. उन्होंने उसे अपना अंगरक्षक बना लिया. तलाविया में राजा का अंगरक्षक बनना एक सैनिक के लिए सम्मान की बात समझी जाती थी. परन्तु ज़ोरान प्रसन्न न हुआ. वह अंगरक्षक बनने के बजाय देश की सीमा पर जा कर शत्रुओं का सामना करना चाहता था.

प्रशिक्षण की समाप्ति पर वह अपने परिवार से मिलने अपने गाँव गया. उसके पिता उसे देख कर प्रसन्न हुए और बोले, "अब मुझे लगता है कि सैनिक बनने का तुम्हारा निर्णय सही था. चरवाहा बन कर तुम अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा देते. मैं जानता हूँ कि प्रशिक्षण के समय तुमने बहुत अधिक मेहनत की थी. अब एक अच्छा सिपाही बनना. शत्रु के साथ सिंह के समान लड़ना, कभी हार न मानना. महान ज़ारान की कृपा से एक दिन सब तुम्हारी शक्ति और तुम्हारे युद्ध कौशल से डरेंगे और तुम्हारी बहादुरी का भी सम्मान करेंगे."

ज़ोरान राजा के अंगरक्षक के रूप में काम करने लगा. दिन बीते, सप्ताह बीते, माह बीते. सब ओर शान्ति थी. परन्तु एक दिन पड़ोस के देश, ब्राशिया, की सेना ने तलाविया पर अचानक आक्रमण कर दिया.

एक समय की बात है, तलाविया और ब्राशिया के बीच लगभग बीस वर्षों तक लंबी लड़ाई हुई थी. उस लड़ाई में दोनों देशों को बहुत हानि हुई थी. दोनों देशों के हज़ारों सैनिक युद्ध में मारे गए थे. लेकिन ब्राशिया की अधिक हानि हुई थी. अंतत: उस देश ने तलाविया से संधि कर ली थी. फिर बीस वर्षों तक दोनों के बीच कोई युद्ध न हुआ था.

ब्राशिया का राजा यंगहार्ज़ बहुत महत्वाकांक्षी था. गुप्तचरों ने उसे सूचना दी थी कि पूर्वी सीमा पर तलाविया की सैन्य शक्ति कमज़ोर थी. तलाविया की लापरवाही से उत्साहित हो कर राजा यंगहार्ज़ ने हमला कर दिया था.

तलाविया के सैनिक युद्ध के लिया तैयार न थे, परन्तु वह सब बहुत बहादुरी से लड़े. हार निश्चित लग रही थी. लड़ाई शुरू होते ही, पूर्वी चौकी के नायक ने एक सैनिक राजमहल

की ओर दौड़ा दिया था. उस संदेशवाहक ने राजा को आक्रमण की सूचना दी और निवेदन किया कि सीमा की सुरक्षा के लिए तुरंत कुछ सैनिक भेजे जाएँ. उसने बताया कि अगर सैनिक भेजने में ज़रा भी देर हुई तो ब्राशिया की सेना जीत जायेगी और राजधानी की ओर बढ़ने लगेगी.

2

आक्रमण

तलाविया की सारी सेना अलग-अलग मोर्चों पर तैनात थी. राजधानी में जो सैनिक थे वह राजधानी की सुरक्षा के लिए तैनात थे. तुरंत कुमक भेजना संभव न था. यह सोच राजा चिंतित हो गये. ज़ोरान वहीं था. उसने कहा, "महाराज, यह सोचने का नहीं, निर्णय लेने का समय है. अगर आप की अनुमति हो तो दो सौ अंगरक्षक अपने साथ ले कर मैं युद्ध-स्थल जाता हूँ. हम शत्रु के दाँत खट्टे कर देंगे. कृपया देर न करें और हमें जाने का तुरंत आदेश दें."

राजा को कोई उपाय सुझाई न दे रहा था. महामंत्री ने भी ज़ोरान के सुझाव का समर्थन किया. महामंत्री ने कहा कि अगर शत्रु सीमा पार कर, देश के भीतर घुस आया तो स्थिति बहुत बिगड़ सकती थी. राजा को भी इस बात का अहसास था कि शत्रु को सीमा पर ही रोकना होगा, किसी भी तरह.

राजा ने ज़ोरान का सुझाव मान लिया और उसे तुरंत सीमा पर जाने का आदेश दिया. दो सौ अंगरक्षक अपने साथ लेकर, ज़ोरान एक आंधी के समान सीमा की ओर चल दिया. परन्तु जब तक यह सैनिक सीमा पर पहुंचे, तब तक ब्राशिया की सेना लड़ाई जीत चुकी थी. हारी हुई तलाविया की सेना बिखर चुकी थी, ब्राशिया के सैनिक तलाविया के भीतर घुसने की तैयारी कर रही थी.

ज़ोरान एक क्रोधी शेर के समान दहाड़ा. उसके साथी सैनिक ब्राशिया की सेना पर टूट पड़े. ब्राशिया के सैनिक बहादुर थे, जीत ने उनका उत्साह बड़ा दिया था, परन्तु ज़ोरान तो एक अद्भुत योद्धा था. युद्ध के मैदान में वह एक प्रचंड चक्रवाक के समान चारों ओर घूम रहा था. ब्राशिया का कोई

भी सैनिक उसका मुकाबला न कर पा रहा था. बड़े से बड़े योद्धा को भी ज़ोरान एक ही वार से गिरा देता था. उसकी शक्ति, साहस और जोश के सामने ब्राशिया के सेना डगमगाने लगी.

तलाविया के जो सैनिक हार कर पीछे हट गये थे वह भी युद्ध के मैदान में लौट आये. ज़ोरान की वीरता देखकर वह सब उत्साह से भर गये. ब्राशिया के सैनिकों की गिनती अभी भी अधिक थी परन्तु वह ज़ोरान का सामना न कर पा रहे थे. ब्राशिया के सैनिक धीरे-धीरे पीछे हटने लगे.

ब्राशिया की सेना हार गई और अपने देश की सीमा में लौट गई. तलाविया की सेना जीत गई. यह एक महत्वपूर्ण विजय थी, क्योंकि ब्राशिया की सेना बड़ी थी और पूरी तैयारी के साथ आई थी. सब जानते थे कि इस जीत का श्रेय ज़ोरान को ही जाता था. तलाविया की सेना छोटी थी, पर ज़ोरान अकेला ही सौ सैनिकों के बराबर था. अपनी वीरता और साहस से उसने युद्ध का पासा पलट दिया था.

सब ने ज़ोरान के साहस और बहादुरी की प्रशंसा की. राजा ने उसे देश का सबसे बड़ा सैनिक सम्मान दिया. लेकिन इस प्रशंसा और सम्मान से ज़ोरान को अधिक ख़ुशी न मिली.

"तुम प्रसन्न नहीं लगते? क्या हम से कोई भूल हुई है?" राजा ने पूछा. ज़ोरान उन्हें अच्छा लगता था.

"महाराज, मैं आपका आभारी हूँ कि इतना बड़ा सम्मान आपने मुझे दिया. सेना में ऐसे कितने ही वीर हैं जो कई युद्ध लड़ चुके हैं, पर उन्हें अभी तक यह सम्मान नहीं मिला. यह सम्मान पाना मेरे लिए गौरव की बात है. लेकिन अगर आप मुझे देश की रक्षा करने के लिए सीमा पर भेज दें तो मेरे लिए उस से बढ़ कर कोई सम्मान नहीं होगा."

राजा ज़ोरान की बात सुन बहुत प्रसन्न हुए. उन्होंने उसे पूर्वी सीमा का सेना नायक बना दिया और उसे तुरंत सीमा पर जाने का आदेश दिया.

सारे तलाविया में उसका नाम प्रसिद्ध हो गया. शत्रु उससे डरने लगे. तलाविया के सभी सैनिक उसका आदर करने

लगे. सभी सैनिकों के लिए वह एक आदर्श था, सब उसके जैसा वीर योद्धा बनना चाहते थे.

ब्राशिया का महत्वाकांक्षी राजा यंगहार्ज़ इस हार से तिलमिला गया. वह तो सोचे बैठा था कि उसकी योजना सफल होगी और उसकी सेना युद्ध में जीत अर्जित करेगी. उसने इस हार का बदला लेने का निश्चय किया. उसने सेना को युद्ध के लिए फिर से पूरी तरह तैयार होने के लिए आदेश दिया. सेना ने छह महीने तैयारी की. हमले की पूरी योजना बनाई गई. युद्ध का अभ्यास भी किया गया. ब्राशिया की सेना के सबसे योग्य और वीर नायक को हमला करने के लिए भेजा गया.

इस बार भी हमला पूर्वी चौकी पर किया गया. ब्राशिया का राजा जानता था कि ज़ोरान पूर्वी चौकी का नायक है. ज़ोरान को पराजित कर वह दिखलाना चाहता था कि ब्राशिया के योद्धा किसी से कम नहीं हैं.

ज़ोरान किसी भी आक्रमण के लिए तैयार था. चौकी पर उसके अधीन पाँच सौ सैनिक थे. ब्राशिया की सेना के

लगभग एक हज़ार सैनिकों ने आक्रमण किया था, परन्तु इतनी बड़ी सेना देख कर भी ज़ोरान बिल्कुल न घबराया. वह तो कब से इस दिन की प्रतीक्षा कर रहा था. अपनी वीरता दिखलाने का उसे सुनहरा अवसर मिल गया था.

ज़ोरन और उसके सैनिक भूखे शेरों की तरह शत्रु पर टूट पड़े. ज़ोरान स्वयं इतनी बहादुरी से लड़ा कि शत्रु सेना उससे भयभीत हो गई, शत्रु सैनिक उसके सामने आने से कतराने लगे. बड़े से बड़ा योद्धा भी उसके आगे टिक न पा रहा था. ब्राशिया के अधिकतर सैनिक या तो मारे गये या बुरी तरह घायल हो गये.

ब्राशिया के सैनिक समझ गये कि वह युद्ध में जीत न पायेंगे. बहुत प्रयास के बाद भी वह आगे न बढ़ पाये थे. सैंकड़ों सैनिकों का बलिदान व्यर्थ जा रहा था. ब्राशिया के सेना ने हार मान ली और पीछे हट गई.

अब चारों दिशाओं में ज़ोरान का नाम प्रसिद्ध हो गया. दूर-दूर के देशों में भी योद्धा उसकी बहादुरी की कहानियाँ सुनने लगे. कई योद्धा तो यह मानने लगे कि महान ज़ारान देव

की भांति ज़ोरान भी एक अजेय योद्धा था. सौ-दो सौ सैनिक एक साथ मिल कर भी ज़ोरान का सामना नहीं कर सकते थे. हर योद्धा के मन में ज़ोरान के प्रति सम्मान था, परन्तु सम्मान से अधिक उनके मन में भय था. हर कोई मन में यही कामना करता था कि उसे कभी ज़ोरान का सामना न करना पड़े.

लेकिन ब्राशिया का राजा यंगहार्ज़ गुस्से से पागल हो रहा था. उसे विश्वास ही न हो रहा था कि इतनी तैयारी के बाद भी उसकी सेना हार कर लौट आई थी. अपनी हारी हुई सेना को देख कर राजा को गहरा धक्का लगा; उसके सैनिक जुझारू योद्धा नहीं, मार खाए हुए कुत्ते के पिल्लों जैसे लग रहे थे.

3

वीलीयन

बदले की आग राजा यंगहार्ज़ के मन में सुलग रही थी. वह हर पल बस एक ही बात सोचता रहता था कि उसे तलाविया से बदला लेना होगा. वह जानता था कि ज़ोरान का डर उसके सैनिकों के मन में बैठ चुका था और जब तक ज़ोरान अपने देश की सीमा की रक्षा कर रहा था, तब तक तलाविया की सेना को हराना संभव न था.

तलाविया की सेना को हराने से पहले ज़ोरान को मारना आवश्यक था. ज़ोरान की मृत्यु ही ब्राशिया की विजय का रास्ता बन सकती थी. परन्तु राजा यंगहार्ज़ को यह समझ न आ रहा था कि ज़ोरान को रास्ते से हटाने के लिए क्या योजना बनाई जाये.

ब्राशिया की सेना में एक सैनिक था जो अपने राजा यंगहार्ज़ की तरह ही महत्वाकांक्षी था. उसका नाम वीलीयन था. वह ताकतवर था पर निडर और साहसी न था. वह एकर्त आदमी भी था. जिस सेना ने तलाविया पर दो बार आक्रमण किया

था वीलीयन उसी सेना में था और उसने दोनों बार युद्ध में भाग भी लिया था, परन्तु दोनों ही बार बड़ी चतुराई के साथ वह युद्ध के मैदान से भाग गया था. युद्ध में उसे एक खरोंच तक न आई थी.

वीलीयन बिना कोई पराक्रम किये अपने राजा की प्रशंसा पाना चाहता था. कोई जोखिम उठाये बिना वह सेना में आगे बढ़ना चाहता था. वह तो ब्राशिया की सेना का सेनापति बनने के सपने देखा करता था.

वीलीयन एक जादूगर को जानता था. जादूगर का नाम था आर्विज़, जो ब्राशिया के उत्तरी जंगल के बीच एक विशाल किले में रहता था. आर्विज़ एक प्रसिद्ध जादूगर था. उसके बारे में लोगों की धारणा थी कि उसके पास कई अनोखी जादुई शक्तियाँ थीं.

आर्विज़ अपने किले के अंदर ही अपना सारा समय बिताता था और जादू के नए-नए प्रयोग करता रहता था. उसके कुछ सहायक भी थे जो उसके साथ किले में ही रहते थे. वह सब कभी-कभार ही नगर जाया करते थे.

वीलीयन जादूगर आर्विज़ के एक सहायक का बेटा था. एक जादू के प्रयोग में आर्विज़ से कुछ भूल हो गई थी और उस भूल के कारण एक दुर्घटना हो गई थी. उस दुर्घटना में वीलीयन के पिता की मृत्यु हो गई थी. आर्विज़ को इस बात से ठेस लगी थी और उसने वीलीयन के पालन-पोषण की ज़िम्मेवारी अपने पर ले ली थी.

दुर्घटना के समय वीलीयन पाँच साल का था और उसी किले में रहता था. परन्तु वह बहुत ही उद्दंड स्वभाव का लड़का था. आर्विज़ की कोई बात न सुनता था, उसके सहायकों को तंग करता था, वन के पशु-पक्षियों को भी सताता था. आर्विज़ ने कई बार उसे समझाने का प्रयास किया था, पर वीलीयन अपने व्यवहार को बदलने को बिलकुल तैयार न था.

जब वह बीस वर्ष का हुआ तो आर्विज़ ने वीलीयन से कहा कि वह युवा हो गया था और उसे सेना में भरती हो जाना चाहिये. आर्विज़ का विचार था की सेना का अनुशासन और प्रशिक्षण उसके स्वभाव में कुछ परिवर्तन ले आयेगा.

वीलीयन भी उस पुराने किले से दूर चला जाना चाहता था. उसे लगा की सेना में भरती होकर वह किले के बाहर का संसार देख पायेगा. आर्विज़ की बात मान कर, वह ब्राशिया की सेना में भरती हो गया था.

सेना में भरती होने के बाद भी वह आर्विज़ से मिलता रहता था. आर्विज़ के सामने वह ऐसे व्यवहार करता था कि जैसे एक सैनिक बन कर उसमें बहुत परिवर्तन आ गया था. जब भी वह आर्विज़ से मिलने आता, वह एक बहादुर और अनुशासित सैनिक होने का ढोंग करता था, एक ऐसा सैनिक जो अपने देश के लिए मर-मिटने को तत्पर था. वीलीयन में आये इस परिवर्तन से आर्विज़ बहुत प्रसन्न था और उसे अपने बेटे समान चाहने लगा था.

तलाविया के दूसरे युद्ध के बाद वीलीयन आर्विज़ से मिलने आया. वह घायल होने का नाटक कर रहा था.

"क्या हुआ?" आर्विज़ ने पूछा. वीलीयन की हालत देख कर वह घबरा गया था. "क्या तुम अस्वस्थ हो? क्या तुम घायल हो?"

“क्या आप नहीं जानते? तलाविया ने हमारे देश पर हमला कर दिया था. हमारी सेना ने शत्रु के सेना के साथ भयंकर युद्ध किया था. हम सब जान हथेलियों पर रख कर लड़ रहे थे. भीषण लड़ाई हुई थी. हमारी विजय निश्चित थी, लेकिन तभी तलाविया की सेना ने हमारे साथ छल किया,” वीलीयन बोलते-बोलते रुक गया.

“क्या किया? कैसा छल किया उन्होंने?” आर्विज़ ने आतुरता से पूछा.

“उन्होंने एक दुष्ट जादूगर की सहायता ली. हम लोग वीर सैनिकों की भांति युद्ध के नियमों के अनुसार लड़ रहे थे, परन्तु उनके जादूगर ने ऐसा जादू किया कि कुछ समय के लिए हम सब अंधे हो गये. हम कुछ देख न पा रहे थे. इस स्थिति का लाभ उठा कर तलाविया के कायर सैनिक हम पर टूट पड़े. हमारे कई सैनिक मारे गये, कई बुरी तरह घायल हो गये. मैं भी घायल हो गया. लेकिन अपने घावों की परवाह किये बिना मैं युद्ध के मैदान में डटा रहा. मैं तब तक लड़ता

रहा जब तक की मेरे साथी खींच कर मुझे एक सुरक्षित जगह नहीं ले गये," वीलीयन ने बड़ी चतुराई के साथ एक झूठी कहानी आर्विज़ को सुनाई.

"तलाविया की सेना ने तो बहुत ही कायरतापूर्ण काम किया. उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिये था. एक सैनिक को सैनिक की तरह ही लड़ना चाहिये, युद्ध में जादू का सहारा लेना बिलकुल गलत है. पर मैंने तो सुन रखा है कि उनकी सेना में ज़ोरान जैसे एक महा बलशाली योद्धा है. क्या वह उस युद्ध में न था?"

"वही दुष्ट तो तलाविया की सेना का नायक था. वह कोई वीर योद्धा नहीं है, उसी कायर ने जादूगर की सहायता ली थी. जब तक वह जादूगर उनकी सहायता करता रहेगा तब तक उन्हें पराजित करना कठिन है. वह लोग जब चाहें हमारे देश पर हमला कर सकते हैं, हमारी भूमि हथिया सकते हैं, हमारी महिलाओं और बच्चों को अपना दास बना सकते हैं."

यह सब बातें वीलीयन कुछ सोच कर ही कह रहा था. वह आर्विज़ से सहायता लेना चाहता था, परन्तु वह जानता था

कि आर्विज़ इतनी सरलता से उसकी सहायता न करेगा. बहादुर सैनिकों के विरुद्ध वह कभी भी अपना जादू प्रयोग न करेगा. पर वीलीयन भी कम धूर्त नहीं था.

4

जादुई खंजर

आर्विज़ का मानना था कि सैनिकों को अपने बल और शौर्य से ही युद्ध जीतने चाहिये और कभी भी छल या जादू की मदद नहीं लेनी चाहिये. वीलीयन आर्विज़ के इन विचारों से परिचित था. वह जानता था कि छल और कपट से शत्रु को हारने में आर्विज़ उसकी सहायता नहीं करेगा. परन्तु वीलीयन के मन में तो कुछ और ही चल रहा था.

वीलीयन तो किसी भी तरह, छल से, कपट से, धोखे से, ज़ोरान को मार डालना चाहता था. वह जानता था कि ज़ोरान के मरते ही तलाविया की सेना को हराना आसान हो जाएगा. वह आर्विज़ को बार-बार कहता रहा कि अब अपने देश को ज़ोरान से बचाना असंभव था.

आर्विज़ वीलीयन की बातों में आ गया. आर्विज़ को भी यह जान कर बहुत बुरा लगा था कि ज़ोरान ने एक दुष्ट जादूगर की सहायता से ब्राशिया की सेना को हराया था.

"मुझे इस बात का पता न था कि ज़ोरान एक नीच व्यक्ति है. मैं तो समझता था कि वह एक वीर योद्धा है. उसने तुम लोगों को हराने के लिए दुष्ट जादूगर की मदद ली, मुझे विश्वास नहीं हो रहा. उसे इस नीचता का दंड मिलना चाहिये," आर्विज़ ने दुःखी मन से कहा.

"पर जब तक वह जादूगर उसके साथ है हम उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते," वीलीयन ने कहा.

"मैं सेना की मदद करना चाहता हूँ. क्या महाराज यंगहार्ज़ मुझे ऐसा करने देंगे?" आर्विज़ ने पूछा.

"नहीं, कभी नहीं. हमारे राजा किसी जादूगर की सहायता न लेंगे. छल और कपट से वह युद्ध नहीं जीतना चाहते."

"फिर तो एक ही रास्ता है. मैं उस जादूगर से मिलने जाऊँगा जो ज़ोरान की मदद कर रहा है. मैं उसे समझाने का प्रयास करूँगा कि उसे युद्ध में किसी सेना की मदद नहीं करनी चाहिये. अगर उसने मेरी बात न मानी तो मैं उसे दंडित करूँगा. मेरी पास ऐसी शक्तियाँ हैं जो किसी जादूगर के पास नहीं है."

"ऐसा करना बहुत कठिन है. ज़ोरान किसी को भी उस जादूगर से न मिलने देगा. ब्राशिया के किसी नागरिक या सैनिक को तो वह जादूगर के निकट भी न देगा. ज़ोरान बहुत ही चालाक और क्रूर आदमी है, अगर हमने जादूगर से मिलने की कोशिश की तो ज़ोरान हमारे साथ कुछ भी कर सकता है."

इतना कह वीलीयन चुप हो गया और किसी सोच में डूब गया. फिर अचानक उसका चेहरा खिल उठा. उसने कहा, "एक रास्ता है, अगर आप मुझे कोई ऐसी जादुई शक्ति दे दें जिससे मैं ज़ोरान को मार सकूँ तो हम तलाविया की सेना को हरा सकते हैं."

"कैसे?" आर्विज़ ने पूछा.

"आपसे जादू सीख कर मैं ज़ोरान को द्वंद्व युद्ध की चुनौती दूँगा. अगर वह मुझ से एक सच्चे योद्धा की भांति लड़ा तो मैं जादू का प्रयोग नहीं करूंगा और उसको युद्ध में हरा दूंगा. लेकिन अगर उसने छल से या किसी जादुई शक्ति के

उपयोग से मुझे पराजित करने की कोशिश की तो आपसे मिली जादुई शक्ति से मैं उसको मार डालूँगा."

"अगर तुमने ज़ोरान को मार भी डाला तो क्या होगा? जब तक वह जादूगर उस सेना की सहायता कर रहा है तब तक उन्हें हराना सरल नहीं है. मुझे लगता है कि हमें पहले उस जादूगर से निपटना होगा," आर्विज़ ने कुछ सोच कर कहा.

आर्विज़ की बात सुन वीलीयन थोड़ा घबरा गया. वह जानता था कि कोई जादूगर ज़ोरान की मदद न कर रहा था, उसने तो एक झूठी कहानी आर्विज़ को बहकाने के लिए सुनाई थी. उसे लग रहा था कि यह कहानी सुन कर आर्विज़ उसे कोई ऐसी जादुई शक्ति दे देगा जिसके प्रयोग से वह ज़ोरान को मार डालेगा. वह तो सिर्फ ज़ोरान को मार कर महाराज यंगहार्ज़ के सामने अपनी धाक जमाना चाहता था, अपने राजा से प्रशंसा और पुरस्कार पाना चाहता था.

"आप एक बात समझ नहीं रहे, अगर ज़ोरान मर गया तो वह जादूगर तलाविया की सेना की मदद न करेगा. वह

ज़ोरान का मित्र है और ज़ोरान के कहने पर ही उस सेना की मदद कर रहा है."

आर्विज़ दुष्ट वीलीयन की बातों में आ गया. उसने मन ही मन तय किया की वह ज़ोरान को मारने में वीलीयन की सहायता करेगा.

"आज से एक हज़ार वर्ष पहले एक महान जादूगर इस देश में रहता था. उसका नाम था बिगटो. उसके पास एक जादुई खंजर था. उस खंजर से अगर किसी आदमी को खरोंच भी मार दी जाए तो वह आदमी पत्थर का बना जाएगा. वह खंजर मैं तुम्हें दूँगा. जब ज़ोरान से तुम द्वंद्व युद्ध करोगे तो जादुई खंजर से उस पर वार करना. अगर उस खंजर से तुम ने ज़ोरान के शरीर पर हल्का सा घाव भी कर दिया तो, जैसे ही उसका खून धरती पर गिरेगा, वह पत्थर का बन जायेगा, सदा के लिए."

वीलीयन की ख़ुशी का ठिकाना न रहा. वह जानता था कि सौ योद्धा एक साथ मिलकर भी ज़ोरान को मार नहीं सकते थे. परन्तु जादुई खंजर से अगर उसने ज़ोरान को घायल कर

दिया तो वह पत्थर का बन जायेगा और उसकी कहानी सदा के लिए समाप्त हो जायेगी.

जादूगर आर्विज़ ने वीलीयन को जादुई खंजर दे दिया और कहा, "एक बात का ध्यान रखना, इसे सिर्फ ज़ोरान के विरुद्ध ही प्रयोग करना. अगर तुम ने इस खंजर से किसी और को घायल किया तो इस खंजर की सारी जादुई शक्ति उसी पल खत्म हो जायेगी."

वीलीयन यह बात सुन थोड़ा निराश हुआ, वह तो मन ही मन सोच रहा था कि इस खंजर से वह अपने सब शत्रुओं को पत्थर का बना कर खत्म देगा.

"अब तुम जाओ और अपने राजा की अनुमति से ज़ोरान को चुनौती दो और उससे द्वंद्व युद्ध करो" आर्विज़ ने वीलीयन से कहा.

5

चाँद सराय

वीलीयन अपनी चतुराई पर फूला न समा रहा था. वह उस दिन का सपना देखने लगा जिस दिन वह ज़ोरान को जादुई खंजर से घायल कर उसे पत्थर का बना देगा. ज़ोरान के मरते ही ब्राशिया की सेना जीत जायेगी और विजय का सारा श्रेय उसे ही मिलेगा,

राजधानी लौट कर उसने राजा से मिलने की अनुमति मांगी.

"महाराज, मैं आपसे कुछ गुप्त चर्चा करना चाहता हूँ."

"तुम हो कौन?" राजा यंगहार्ज़ ने पूछा.

"महाराज, मेरा नाम वीलीयन है, मैं आपकी सेना का एक सिपाही हूँ, मेरे पास ज़ोरान को मारने की एक योजना है."

"क्या योजना है?" राजा ने संदेह भरी दृष्टि से उसे देखते हुए कहा.

"मैं ज़ोरान को द्वंद्व युद्ध करने के लिए चुनौती दूँगा. मैं उससे युद्ध करूँगा और उसे मार डालूँगा."

राजा को उसकी बात का विश्वास न हुआ, "ज़ोरान तो एक भयंकर योद्धा है, सौ सैनिक मिल कर भी उसे हरा नहीं सकते, तुम अकेले कैसे उसे मार पाओगे?"

"महाराज, मेरा विश्वास करें, वह कितना भी भयंकर योद्धा क्यों न हो, मैं उसे हरा दूंगा और उसे मार डालूँगा," वीलीयन ने बड़े उत्साह और आत्म-विश्वास से कहा.

"हम तुम्हारी बात पर विचार करेंगे," राजा यंगहार्ज़ ने कहा.

राजा ने अपने मंत्री को आदेश दिया कि वह वीलीयन के बारे में सारी जानकारी प्राप्त करे. दो-चार दिनों के बाद मंत्री ने राजा को बताया, "महाराज, वीलीयन कोई बहादुर सैनिक नहीं है. द्वंद्व युद्ध में वह ज़ोरान का सामना कभी न कर पायेगा. लेकिन प्रसिद्ध जादूगर आर्विज़ के साथ वीलीयन के अच्छे संबंध हैं. मेरा संदेह है कि वीलीयन उस जादूगर से कोई जादुई शक्ति ले कर आया है. उस जादुई शक्ति की सहायता से वह छल से ज़ोरान को मारने की योजना बना रहा है. अगर वह अपनी चाल में सफल हो जाता है तो यह हमारे लिए अच्छा ही है. हम उसे कुछ पुरस्कार दे देंगे और सेना

में अधिकारी भी बना देंगे. अगर वह अपनी योजना में विफल हो जाता और ज़ोरान के हाथों मारा जाता है तो यह उसका दुर्भाग्य होगा."

दो बार युद्ध में हारने के कारण ब्राशिया का राजा अपमान और गुस्से से तिलमिला रहा था. वह किसी भी तरह तलाविया की सेना को हरा कर अपमान का बदला लेना चाहता था. उसे भी लगा की वीलीयन को अनुमति दे देनी चाहिये. वीलीयन को राजमहल बुलाया गया.

"हमें पता चला है कि तुम एक बहुत ही बहादुर सैनिक हो. अपने देश के लिए मरने को तत्पर रहते हो. हमें तुम पर गर्व है. जाओ और ज़ोरान को चुनौती दो. पर स्मरण रहे, उसके साथ वीरों की भांति युद्ध करना, उसे युद्ध में पराजित करना, उसका वध करना. अगर तुम सफल हुए तो तुम्हें सेना में कप्तान बना देंगे. अगर तुम ने द्वंद्व युद्ध में वीरगति पाई तो सारा देश तुम्हारा सम्मान करेगा. शूरवीरों की भांति जाओ और शूरवीरों की भांति द्वंद्व युद्ध करो."

वीलीयन ने राजा का बार-बार धन्यवाद किया. उसने कहा, "अपने देश के लिए मर मिटना मेरे लिए गौरव की बात होगी है. मेरा सौभाग्य है कि मैं एक महान राजा का एक सैनिक हूँ."

मंत्री ने कहा, "एक अनुभवी नायक की कमान में एक हज़ार सैनिक तलाविया की पूर्वी चौकी के दक्षिण में स्थित जंगल में छिप कर रहेंगे. वह तुम्हारे संकेत की प्रतीक्षा करेंगे. अगर तुम ने ज़ोरान को मार डाला तो एक अग्नि बाण चला कर नायक को सूचित कर देना. हमारी सेना तुरंत पूर्वी चौकी पर आक्रमण कर देगी."

वीलीयन को अपनी सफलता पर विश्वास न हो रहा था. वह तुरंत तलाविया की पूर्वी सीमा की ओर चल दिया.

वीलीयन मन ही मन चिंतित भी था. अभी तक वह तय न कर पाया था कि ज़ोरान को वह कैसे द्वंद्व युद्ध के लिए चुनौती देगा. और अगर ज़ोरान ने चुनौती स्वीकार कर भी ली तो वह कैसे ज़ोरान को हरा पायेगा. वह जानता था कि ज़ोरान के साथ वह द्वंद्व युद्ध नहीं लड़ सकता था, ऐसे

युद्ध में तो ज़ोरान एक ही वार से उसको मार डालेगा. ताकत और बहादुरी में वह ज़ोरान की बराबरी कभी नहीं कर सकता था. ज़ोरान को तो छल से ही मारा जा सकता था. इसके अतिरिक्त और कोई उपाय न था .

"ज़ोरान को बस एक बार बिगटो के जादुई खंजर से घायल करना होगा और वह पत्थर का बन जायेगा. पर मैं उसे घायल कैसे कर पाऊँगा? उसके निकट पहुँचे बिना उस पर खंजर से वार करना असंभव है, और उसके निकट पहुँचने का कोई रास्ता सुझाई नहीं दे रहा है," यही विचार उसके मन में लगातार चल रहा था.

तलाविया की पूर्वी चौकी के निकट चाँद सराय थी. वीलीयन उस सराय में ठहर गया. तलाविया के सैनिकों को धोखा देने के लिए उसने एक व्यापारी का भेष बना रखा था. उसने कुछ चरवाहों को पैसों देकर तलाविया के सीमा चौकी की गुप्तचरी करने के लिए तैयार कर लिया.

उन चरवाहों में दो लोग बहुत ही अच्छे गुप्तचर साबित हुए. उन्होंने तलाविया की पूर्वी चौकी की सारी जानकारी इकट्ठी

कर वीलीयन को दी. लेकिन यह जानकारी प्राप्त करने के बाद भी वीलीयन उलझन में फंसा रहा, ज़ोरान को छल से मारने का कोई तरकीब उसे सुझाई न दे रही थी.

पूर्वी चौकी की सुरक्षा का प्रबंध बहुत अच्छा था. चौकी पर जितने भी सैनिक थे वह सब अच्छे योद्धा थे, सब देश पर मर-मिटने को तैयार थे और अपने नायक ज़ोरान का बहुत सम्मान करते थे. हर सिपाही बड़ी मुस्तैदी से अपना काम करता था और कभी कोई गलती न करता था.

वीलीयन निराश होने लगा. उसे लगने लगा था कि उसने एक मूर्खता पूर्ण योजना बना ली थी और इस योजना के सफल होने की कोई संभावना न थी.

"मुझे आर्विज़ के पास वापस जाना होगा और उससे कहना होगा कि मुझे कोई ऐसी जादुई शक्ति दे जिसका प्रयोग मैं दूर से ही कर पाऊं और ज़ोरान को मार सकूँ. बिगटो का जादुई खंजर तो मेरे किसी काम न आयेगा," वीलीयन अपने-आप से बातें कर रहा था.

एक दिन निराशा में डूबा वीलीयन सराय में बैठा शराब पी रहा था. उस समय सराय में कई यात्री थे और वह सब या तो भोजन कर रहे थे या शराब पी रहे थे. शराब पीने वालों में कुछ तलाविया के सैनिक भी थे.

****

6

सुंदर पक्षी

तलाविया के सैनिकों को शराब का सेवन करने की अनुमति न थी. उनके राजा का मानना था की शराब सैनिकों को कमज़ोर और सुस्त बना देती थी. तलाविया के अधिकांश सैनिक शराब छूते भी न थे. परन्तु कुछ सिपाही थे जो कभी-कभार चोरी-छिपे शराब पी लेते थे.

जो सैनिक शराब पी रहे थे उनमें रेज़र नाम का एक सैनिक भी था.

रेज़र एक बहादुर और शक्तिशाली योद्धा था. उसने कई युद्धों में भाग लिया था और बड़ी वीरता के साथ लड़ा था. साहस और शौर्य के लिए उसे पुरस्कार भी मिला था. वह आशा कर रहा था कि एक दिन उसे पूर्वी सीमा चौकी का नायक बनाया जायेगा. परन्तु राजा ने उसके बजाय एक युवक को नायक बना दिया था. वह युवक ज़ोरान था और रेज़र को उसके अधीन काम करना पड़ रहा था.

रेज़र इस बात से बहुत दुःखी था. वह आयु मैं ज़ोरान से बड़ा था और सेना में काम करने का अनुभव भी अधिक था. इस कारण वह अपने राजा से अप्रसन्न था. उसे लग रहा था कि राजा ने उसे अपमानित किया था. परन्तु ज़ोरान के अधीन काम करने के सिवाय उसके पास कोई उपाय नहीं था.

रेज़र और उसके मित्र सराय में बैठे शराब पी रहे थे. तभी रेज़र ने कहा, "मित्रों, आज जी भर कर शराब पीते हैं."

"नहीं, अब हमें यहाँ से चल देना चाहिए. शराब पीने पर सख्त मनाही है. हमारे राजा का आदेश है. आदेश की अवमानना करके हम थोड़ी पी लेते हैं. लेकिन अगर हम ने अधिक शराब पी तो नायक ज़ोरान को अवश्य पता चल जाएगा और वह अवश्य हमें दंडित करेगा," रेज़र के एक साथी ने कहा.

लेकिन रेज़र अपनी बात पर अड़ गया. वह अपने साथियों को धमकाने लगा.

उनमें बहस छिड़ गई. वीलीयन निकट की मेज़ पर बैठा उनकी बातें सुन रहा था. उनकी बातों से उसने अनुमान लगाया कि वह सब सैनिक थे और उनमें से एक सैनिक दुःखी था, गुस्से में भी था.

वीलीयन उनके पास आया और बोला, "मैं एक व्यापारी हूँ और इस्तांबुल जा रहा हूँ. व्यापार के सिलसिले में मुझे अकसर अलग-अलग देशों में जाना पड़ता है. कुछ दिनों के लिए यहाँ रुका हूँ. क्या मैं आपके साथ बैठ जाऊँ?"

रेज़र ने उसे संदेह से देखा. परन्तु इसके पहले कि वह कुछ कहता वीलीयन ने सबसे महंगी शराब पीने के लिए मँगवा ली. उन सैनिकों ने इतनी महंगी शराब कभी न पी थी. वह अपने को रोक न पाये और वीलीयन के साथ बैठ कर शराब पीने लगे.

"दो माह बाद इस्तांबुल से मैं लौट कर आऊँगा. संसार की सबसे बढ़िया शराब मैं वहाँ से ले कर आऊँगा. ऐसी शराब यहाँ नहीं मिलती. उस शराब का स्वाद ही अलग है. आप

लोगों को वह शराब अच्छी लगेगी," वीलीयन ने मस्ती में कहा.

थोड़े ही समय में तलाविया के सैनिक वीलीयन से ऐसे बातें करने लगे जैसे कि वह बरसों पुराने मित्र हों.

जब वह लोग शराब पी रहे थे और आपस में गपशप कर रहे थे तब का एक सुंदर पक्षी कहीं से आया और सराय की खिड़की पर आकर बैठ गया. वह एक बाज़ जैसा दिख रहा था, उसके पंख गहरे नीले रंग के थे.

"कितना सुंदर पक्षी है," एक सैनिक ने कहा.

"क्या यह कोई तोता है?" दूसरे ने पूछा.

"नहीं, यह तोता नहीं है. शायद बाज़ है, नहीं, बाज़ भी नहीं लगता. यह एक अनोखा पक्षी है. ऐसा पक्षी मैंने पहले कभी नहीं देखा," तीसरे ने कहा.

वीलीयन ने उस पक्षी की ओर देखा भी नहीं. वह तो मन ही मन सोच रहा था कि किसी न किसी तरह उसे रेज़र से मित्रता कर, उसका विश्वास जीतना होगा. रेज़र एक बहादुर

योद्धा था. वह दुःखी और क्रोधित था. उसे ज़ोरान के अधीन काम करना पड़ रहा था. वीलीयन यह बात समझ गया था. उसे लग रहा था कि रेज़र का विश्वास जीत कर उसे ज़ोरान के विरुद्ध भड़काया जा सकता था.

"मैं सेना के बारे में अधिक नहीं जानता पर फिर भी मुझे लगता है कि आपके राजा ने आपके साथ अन्याय किया. आप जैसा महान योद्धा ही नायक बनना चाहिये था. मैंने सुना है कि ज़ोरान ने तो एक-दो लड़ाइयाँ ही लड़ी है. उसे अनुभव ही कितना है? आप के होते हुए राजा ने ज़ोरान जैसे अनुभवहीन सैनिक को कैसे नायक बना दिया?" वीलीयन ने रेज़र को उकसाते हुए कहा.

"पर ऐसा ही हुआ है," रेज़र ने मायूस हो कर कहा.

"क्या आप ने विरोध नहीं किया?"

"आप एक व्यापारी हैं. आप नहीं जानते. लेकिन एक सैनिक को विरोध करने का अधिकार नहीं होता."

"यह अन्याय आप सहन कैसे कर गये?"

"मैं कर भी क्या सकता हूँ?"

"एक सैनिक के लिए आत्म-सम्मान ही सबसे महत्वपूर्ण होता है. आप को अपने आत्म-सम्मान के लिए, अपने गौरव के लिए लड़ना चाहिये," वीलीयन ने उकसाने का प्रयास किया.

रेज़र कुछ समझ न पा रहा था कि इस स्थिति में उसे क्या करना चाहिये. शराब पीने के कारण उसकी बुद्धि ने भी काम करना बंद कर दिया था.

"आप को दिखलाना होगा कि ज़ोरान की भांति आप भी बहादुर और शक्तिशाली हैं," वीलीयन ने आग में घी डालने का काम किया.

"मैं ज़ोरान से अधिक बहादूर और शक्तिशाली हूँ," रेज़र जोश में आकर बोला.

"यह बात आप जानते हैं, मैं जानता हूँ, आप के मित्र जानते हैं. पर इस देश के लोग नहीं जानते, राजा भी शायद नहीं जानते. अगर वह जानते होते तो आप को ही नायक बनाते. अब आप को कुछ ऐसा करना होगा कि सब समझ जाएँ कि

आप कितने बहादुर हैं, कितने शक्तिशाली हैं," वीलीयन ने उसे उकसाया.

"मेरे मित्र, सब जानते हैं कि मैं तलाविया का एक सर्वश्रेष्ठ योद्धा हूँ. हमारे महाराज भी जानते हैं," रेज़र ने ऊंची आवाज़ में कहा.

"अगर उन्हें इस बात का पता होता तो इस चौकी के नायक आप होते और ज़ोरान आपके अधीन एक सिपाही होता, वैसे ही जैसे आज आप हैं, उसके अधीन हैं, एक मामूली सिपाही."

"मुझे क्या करना चाहिये?" रेज़र उसकी बातों में उलझ गया और अनचाहे ही उससे पूछ बैठा.

****

7

चुनौती

"आप को कुछ ऐसा करना चाहिये की सब पर आपकी धाक जम जाये," वीलीयन ने मन ही मन मुस्कराते हुए कहा.

"अर्थात?"

"आप को ज़ोरान को द्वंद्व युद्ध करने के लिए चुनौती देनी चाहिये."

"ज़ोरान के साथ द्वंद्व युद्ध?" रेज़र थोड़ा आश्चर्यचकित हो कर बोला.

"हां, आपके पास यही एक रास्ता है अपना खोया हुआ आत्म-सम्मान पाने का. तभी सब को पता चलेगा कि आप इस देश के सबसे वीर सैनिक हैं, एक महान योद्धा हैं, तभी आपके राजा को अपनी भूल का अहसास होगा और वह आप को इस चौकी का नायक बना देंगे," वीलीयन ने उसे उकसाते हुए कहा.

शराब के नशे में रेज़र कुछ सोच न पा रहा था. उसका क्रोध भड़क उठा. वह बोला, "तुम ठीक कह रहे हो. ज़ोरान समझता है की वह संसार का सबसे बड़ा योद्धा है, पर वह मूर्ख है, घमंडी है. उसने अब तक सिर्फ ब्राशिया के सैनिकों से ही लड़ाई लड़ी है. लेकिन ब्राशिया के सभी सैनिक कायर हैं, वह लड़ाई में मरने से डरते हैं और अवसर मिलते ही मैदान से भाग जाते हैं. ऐसे सैनिकों से लड़ कर ज़ोरान अपने को संसार का सबसे महान योद्धा मानने लगा है. मेरे जैसे योद्धा के साथ उसने कभी लड़ाई नहीं लड़ी है. मैं उसे सिखाऊँगा की लड़ना क्या होता है. मेरे मित्र, तुम ने मुझ पर आज बहुत उपकार किया जो मुझे सही रास्ता दिखाया. मुझे तो पहले ही उसे चुनौती देनी चाहिये थी, पर मैं औरतों की भांति मन ही मन में घुटता रहा."

वीलीयन अपनी चतुराई पर मन ही मन प्रसन्न हुआ. उसने ज़ोरान को मारने का तरीका ढूँढ लिया था; रेज़र को अपना हथियार बना कर वह ज़ोरान पर हमला करेगा और उसे मार डालेगा.

वीलीयन ने चालाकी से अपनी प्रसन्नता छिपा कर कहा, “मित्र, कुछ भी निर्णय लेने से पहले आप को अच्छी तरह सोच लेना चाहिये. अभी आप शराब के नशे में हो, ऐसे में कोई निर्णय लेना ठीक न होगा. ज़ोरान एक बहुत शक्तिशाली और बहादुर योद्धा है. उसने कई योद्धाओं को मार गिराया है. वह आपका नायक भी है. अगर आप कोई दुःसाहस कर बैठे तो बाद में पछताना भी पड़ सकता है. मैं एक अच्छा मित्र खोना नहीं चाहता.”

“तुम्हें लगता है कि मैं द्वंद्व युद्ध में हार जाऊँगा? तुम्हें ऐसा लगता है क्योंकि तुमने मुझे उत्तर देश के बर्बर दैत्यों के साथ लड़ते नहीं देखा. अगर तुम ने मुझे उन क्रूर लोगों के साथ लड़ते हुए देखा होता तो तुम मेरी शक्ति या बहादुरी पर संदेह नहीं करते. विश्वास रखो द्वंद्व युद्ध में मेरी ही जीत होगी, मैं ज़ोरान को हरा दूँगा,” रेज़र अकड़ कर बोला.

इतना कह, गुस्से से भरा रेज़र वहाँ से दनदनाता हुआ चला गया. वीलीयन अपनी प्रसन्नता रोक न पा रहा था. उसने

अनुमान भी न लगाया था कि इतनी सरलता से रेज़र उसके जाल में फंस जायेगा.

वीलीयन ने ध्यान न दिया था कि सारे समय नीले पंखों वाला सुंदर पक्षी सराय की खिड़की में चुपचाप बैठा उसकी ओर देख रहा था और सारी बातें बड़े ध्यान से सुन रहा था.

रेज़र जब अपनी चौकी पर पहुँचा तब भी वह बहुत गुस्से मैं था. उसने बिना सोचे-समझे ज़ोरान को चुनौती दी और कहा वह अगले दिन उससे द्वंद्व युद्ध करेगा.

ज़ोरान को आश्चर्य हुआ. उसने कभी सोचा भी न था कि उसका ही कोई सैनिक उसे द्वंद्व युद्ध की चुनौती देखा. परन्तु चुनौती स्वीकार करने के अतिरिक्त उसके पास कोई विकल्प न था. उस काल में कोई भी वीर योद्धा द्वंद्व युद्ध की चुनौती अस्वीकार नहीं करता था.

अगर कोई योद्धा द्वंद्व युद्ध चुनौती ठुकराता तो उसे चुनौती देने वाले के पैरों में अपना सिर झुकाना पड़ता था. इतना ही नहीं, सिर झुका कर अपना टोप उसके पैरों में रख कर, अपना सबसे प्रिय हथियार चुनौती देने वाले को समर्पित

करना पड़ता था. इस तरह द्वंद्व युद्ध की चुनौती देने वाला योद्धा विजयी माना जाता था.

कोई भी वीर ऐसा अपमान सहन करने को तैयार न होता था. ज़ोरान कैसे ऐसा अपमान सह लेता. उसने रेज़र की चुनौती तुरंत स्वीकार कर ली. तय हुआ की अगले दिन सूर्यास्त से एक घंटा पहले दोनों द्वंद्व युद्ध लड़ेंगे.

****

8

वचन

अगली सुबह रेज़र को अहसास हुआ कि उसने ज़ोरान को चुनौती दे कर भारी भूल कर दी थी. ऐसा नहीं था कि वह ज़ोरान से डरता था. पर उसे लगा कि ज़ोरान जैसे योद्धा को चुनौती देना गलत था. ज़ोरान ने न कभी रेज़र का अपमान किया था और न ही कभी उसके साथ बुरा व्यवहार किया था. उसे यह डर भी सताने लगा कि अगर तलाविया के राजा को इस बात का पता चला तो वह बहुत क्रोधित होंगे, शायद उसे दंड भी दें.

उसे अपने आप पर गुस्सा आ रहा था. गुस्से और उत्तेजना में शराब पीने के लिए वह अकेले ही चाँद सराय आ गया. वहाँ उसे वीलीयन मिला. वीलीयन वहीं बैठा शराब पी रहा था.

"मैंने बहुत ही मूर्खता पूर्ण काम कर दिया है. मैंने अपने नायक ज़ोरान को चुनौती दे दी है. आज शाम हम दोनों द्वंद्व युद्ध लड़ेंगे, सूर्यास्त से पहले," रेज़र की वाणी में

निराशा झलक रही थी. उसे अपनी भूल पर पछतावा हो रहा था.

रेज़र को इस बात का ध्यान न रहा कि वीलीयन ने ही उसे ऐसा करने के लिए उकसाया था. वह तो यह समझ रहा था कि वीलीयन उसका सच्चा मित्र है.

"मित्र, मैंने तो कल ही तुम को सावधान कर दिया था. कल तुम ने थोड़ी अधिक ही शराब पी ली थी. इस कारण मैंने कहा था कि सोच समझ कर ही कुछ तय करना. पर अब पछताने से क्या लाभ? अब इस युद्ध से पीछे हटना अपमान भरी बात होगी. एक वीर के लिए आत्म-सम्मान खोने से तो अच्छा है कि वह मृत्यु को गले लगा ले," वीलीयन चतुराई से उसे उकसाने की कोशिश करता रहा.

"मैं जानता हूँ कि अब मुझे द्वंद्व युद्ध करना ही होगा, अन्यथा बहुत अपमानित होना पड़ेगा. मेरे साथी भी मुझ पर हँसेंगे. अब अपने आत्म-सम्मान के लिए मुझे ज़ोरान से लड़ना ही होगा, चाहे इस युद्ध में मेरी मृत्यु हो जाए."

“विश्वास करो जीत तुम्हारी ही होगी. निश्चय ही ज़ोरान की हार होगी. लेकिन अब हमें यह सोचना है कि इस युद्ध की तैयारी कैसे की जाए? सबसे पहले तुम शराब पीना बंद करो. आज तुम शराब को हाथ भी न लगाना. तुम को पूरी तरह स्वस्थ रहना है और अपने मन को शांत रखना है.”

“पर ज़ोरान से मैं कैसे लड़ पाऊँगा? वह इतना अच्छा आदमी है. सब उसे बहुत पसंद करते हैं,” रेज़र अपने विचारों में उलझता जा रहा था.

“यह ज़रूरी नहीं है कि तुम उसका वध करो. बस, उसे घायल कर दो. उसे पराजित कर दो. इससे यह प्रमाणित हो जायेगा कि तुम उसके समान ही एक वीर योद्धा हो”

“लेकिन मैं ज़ोरान को जानता हूँ, वह कभी हार नहीं मानेगा. वह अपनी अंतिम साँस तक लड़ता रहेगा. मुझे भय है कि यह लड़ाई तभी समाप्त होगी जब हम दोनों में से एक की मृत्यु हो जायेगी,” रेज़र ने मायूस हो कर कहा.

“अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ,” वीलीयन ने अपनी अंतिम चाल चली.

"कैसे?" रेज़र ने संदेह की दृष्टि से देखते हुए पूछा.

"मेरे पास एक जादुई खंजर है. अगर तुम उस खंजर से उसे घायल कर दो तो वह हार जायेगा. उसके घाव से बहता खून जैसे ही धरती पर गिरेगा, ज़ोरान अपनी सारी शक्ति खो बैठेगा. फिर वह लड़ न पायेगा और तुम जीत जाओगे," वीलीयन ने धीमे से कहा.

"परन्तु लड़ाई में जादुई खंजर का उपयोग नहीं किया जा सकता. ऐसा करना अनुचित होगा. मुझे अपने पर पूरा विश्वास है और, बिना किसी छल के, मैं ज़ोरान को हरा दूंगा."

"क्या तुम्हारे राजा ने तुम्हारे साथ उचित व्यवहार किया था? एक तरह से तो तुम्हारे साथ भी छल हुआ था. यह लड़ाई तुम न तो ज़ोरान का वध करने के लिए लड़ रहे हैं और न ही स्वयं को मारने के लिए. तुम को तो बस यह प्रमाणित करना है कि तुम एक महान योद्धा हो, ज़ोरान से भी बड़े वीर हैं. इसलिये तुम्हें कोई ऐसा उपाय सोचना होगा जिससे तुम, बिना ज़ोरान को मारे, यह लड़ाई जीत जाओ. यह

जादुई खंजर वही उपाय है. यह उसे शक्तिहीन कर देगा और तुम द्वंद्व युद्ध जीत जाओगे, बस," वीलीयन ने उसे अपनी बातों के जाल में फांसने की पूरी कोशिश की.

रेज़र वीलीयन की बातों फंस गया और उस धूर्त का सुझाव स्वीकार कर लिया.

"इस खंजर के विषय में तुम किसी से कुछ कहोगे तो नहीं?" रेज़र ने पूछा.

"मैं किसी को कुछ नहीं बता सकता. अगर इसके बारे में कोई जान गया तो खंजर की सारी जादुई शक्ति समाप्त हो जायेगी. इसलिए तुम भी इसके बार में किसी को कुछ नहीं बता सकते. और तुम को एक और बात का ध्यान रखना है, इस खंजर का सिर्फ एक बार ही प्रयोग हो सकता है. इसलिये खूब सोच-समझ कर इसका इस्तेमाल करना. जब तुम्हें विश्वास हो जाये कि तुम ज़ोरान के शरीर पर एक गहरा घाव कर पाओगे तभी तुम इसका इस्तेमाल करना. घाव इतना गहरा हो कि घाव से खून बह कर नीचे धरती पर गिरे. जैसे ही उसका खून धरती पर गिरेगा, वह अपनी सारी शक्ति खो

देगा. उसका सारा शरीर शिथिल हो जाएगा. फिर वह तुम से लड़ न पायेगा. तुम्हारी जीत हो जाएगी," वीलीयन ने बड़े जोश के साथ कहा.

रेज़र यह बात न जानता था कि वीलीयन उससे झूठ बोल रहा था. जादुई खंजर से घाव होने पर ज़ोरान सदा के लिए पत्थर का बन जाने वाला था, उसके मन में ज़ोरान को हारने की इच्छा इतनी तीव्र थी कि वह वीलीयन के झूठ को सच मान लिया.

रेज़र बहादुर था, शक्तिशाली था, परन्तु उसे भय था कि कहीं वह ज़ोरान से हार न जाये. वह हारना न चाहता था, अतः वीलीयन की बातों में आकर उसने छल का सहारा लेने की बात मान ली.

"लाओ, मुझे वह जादुई खंजर दे दो. पर पहले यह वचन दो कि तुम इसके विषय में किसी से कुछ न कहोगे," रेज़र ने कहा.

"मेरे प्रिय मित्र, मैं वचन देता हूँ कि खंजर की बात मैं किसी से न कहूँगा," इतना कह वीलीयन ने उसे जादुई खंजर दे दिया.

जब वीलीयन और रेज़र यह बातें कर रहे थे, नीले पंखों वाला अनोखा पक्षी कहीं से आकर उनके निकट एक पेड़ पर आ बैठा था और उन दोनों के एकटक देख रहा था.

****

9

द्वंद्व युद्ध

सूर्यास्त से पहले ज़ोरान और रेज़र द्वंद्व युद्ध लड़ने के लिए, पूर्वी चौकी से दूर, जंगल में एक खुली जगह आ गये. हार-जीत का निर्णय करने के लिए दो सैनिक भी उनके साथ थे, एक सैनिक को ज़ोरान ने चुना था, दूसरे को रेज़र ने. उन दोनों ने द्वंद्व युद्ध के सारे नियम दोनों योद्धाओं को समझा दिए. द्वंद्व युद्ध शुरू हुआ.

दोनों ने तलवारों से लड़ना शुरू किया. दोनों शक्तिशाली और बहादुर थे और एक-दूसरे पर पूरी ताकत और चतुराई से वार कर रहे थे. दोनों को कई घाव लगे परन्तु कोई भी घाव गहरा न था. फिर भालों से लड़ने लगे. रेज़र को एक-दो गहरे घाव लगे पर वह हिम्मत न हारा और एक क्रोधी शेर के समान ज़ोरान पर हमला करने लगा.

रेज़र ने कई हमले किये परन्तु ज़ोरान के शरीर पर वह एक भी गहरा घाव न कर पाया. उसका साहस कम होने लगा. वह हारना न चाहता था. उसने जादुई खंजर का इस्तेमाल

करने का सोचा. वह जानता था कि उस खंजर के एक ही वार से लड़ाई खत्म हो सकती थी. उसने खंजर निकाला. एक पल के लिए उसकी अंतरात्मा ने उसे कोसा. पर अगले ही पल, सब भूल कर, वह ज़ोरान पर हमला करने लगा. जादुई खंजर से ज़ोरान को घायल करने के कई प्रयास उसने किये.

अचानक ज़ोरान बिजली के तेज़ी से रेज़र पर झपटा और उसके कंधे पर एक ज़ोर का वार किया. रेज़र बुरी तरह घायल हो गया. उसके पाँव लड़खड़ाने लगे. बहुत प्रयास कर वह अपने आप को खड़ा रख पाया. ज़ोरान चाहता तो उसी पल, उस पर वार कर, उसे मार सकता था. परन्तु वह रेज़र को मारना न चाहता था. वह रेज़र का सम्मान करता था. ज़ोरान रुक गया.

रेज़र को लगा कि खंजर से वार करने का यही सुनहरा अवसर आ था. उसने मन ही मन सोचा उसे अपनी पूरी ताकत लगा कर ज़ोरान पर जादुई खंजर से हमला करना होगा और उसने वैसा ही किया. ज़ोरन इस हमले के लिए

तैयार न था, वह तो द्वंद्व युद्ध के जजों को संकेत कर रहा था कि वह युद्ध समाप्ति की घोषणा करें.

वह रेज़र के वार से बच न पाया. आखिरकार रेज़र जादुई खंजर से ज़ोरान के शरीर में एक गहरा घाव करने में सफल हो गया था.

रेज़र ने पूरी ताकत लगा कर वार किया था. देखते ही देखते, ज़ोरान के घाव से बहता लहू धरती पर आ गिरा. रेज़र ने राहत की सांस ली. अब उसकी जीत निश्चित थी.

एक पेड़ के पीछे छिप कर वीलीयन द्वंद्व युद्ध देख रहा था. जैसे ही रेज़र ने ज़ोरान पर जादुई खंजर से वार किया, वीलीयन ख़ुशी से उछल पड़ा.

"अब जैसे ही ज़ोरान का खून धरती पर गिरेगा, वह सदा के लिए पत्थर का बन जाएगा. जैसे ही ज़ोरान पत्थर का बनेगा मैं अपनी सेना को तलाविया पर हमला करने का संकेत दे दूंगा," वीलीयन ने मन ही मन कहा. अपनी प्रसन्नता छिपा न पा रहा था.

ज़ोरान के घावों से बहता खून धरती पर टपकता रहा, टपकता रहा. पर न ही उसकी शक्ति क्षीण हुई और न ही वह पत्थर का बना.

"ऐसा नहीं हो सकता, आर्विज़ का जादू कभी विफल नहीं हो सकता. ज़ोरान जल्दी ही पत्थर का बना जायेगा, जल्दी ही उसकी कहानी खत्म हो जायेगी," वीलीयन ने अपने आप से कहा. उसकी चिंता और घबराहट बढ़ने लगी थी क्योंकि ज़ोरान में कोई परिवर्तन न आया था. वह तो पूरे जोश और गुस्से के साथ रेज़र पर टूट पड़ा था.

रेज़र भी घबरा गया था. उसने छल से ज़ोरान को हारने का प्रयास किया था. ज़ोरान न ही शक्तिहीन हुआ था और न ही उसने लड़ना बंद किया था.

ज़ोरान पूरी ताकत लगा कर रेज़र से लड़ने लगा था. उसने रेज़र को बुरी तरह घायल कर दिया था. अचानक रेज़र ने हार मान ली. उसने अपने शस्त्र फैंक दिये और ज़ोरान के सामने घुटने टेक दिए. ज़ोरान इतने गुस्से में था कि उसने

रेज़र का जादुई खंजर उठा लिया और उसी खंजर से रेज़र को मारने के लिए उस पर झपटा.

पर चाह कर भी वह रेज़र को जान से न मार सका. रेज़र ने मातृभूमि के लिए कई बार अपना खून बहाया था. इस कारण वह रेज़र का बहुत सम्मान करता था. ज़ोरान को अपने पर ही गुस्सा आ रहा था. बिना कुछ कहे वह दनदनाता हुआ वहाँ से चला गया. रेज़र अकेला रह गया. सूर्य अस्त हो रहा था और चारों ओर अँधेरा फ़ैल रहा था.

वीलीयन के हाथ-पाँव कांप रहे थे. उसकी योजना पूरी तरह विफल हो गई थी. आर्विज़ का जादू किसी काम न आया था. वह जानता था कि अब वह ब्राशिया लौट न पायेगा. उसने सोच कि उसे यहाँ से तुरंत भाग जाना चाहिये. अगर रेज़र ने उसके बारे में ज़ोरान को बता दिया और अगर ज़ोरान को उसकी चाल का पता लग गया तो वह उसे अवश्य मार डालेगा.

जैसे ही वह वहाँ से भागने के लिए मुड़ा उसने अपने सामने आर्विज़ को पाया. उसे अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ. डर से उसकी बोलती बंद हो गई.

"क्या तुम ने ज़ोरान को चुनौती दी? क्या तुम ने उसके साथ द्वंद्व युद्ध किया?" आर्विज़ ने कड़क आवाज़ में पूछा.

वीलीयन इतना सहम गया था कि वह कुछ कह ही नहीं पाया. न ही वह कोई बहाना सोच पाया.

"क्या तुम समझते हो कि मैं निरा मूर्ख हूँ? मैं शुरू से ही जानता था कि तुम एक कायर हो और ज़ोरान जैसे योद्धा से कभी न लड़ोगे. तुम में न तो इतना साहस हैं और न ही इतना बल कि ज़ोरान जैसे महान योद्धा को चुनौती दे पाओ," आर्विज़ का गुस्सा बढ़ता जा रहा था.

****

10

विश्वासघात

"नहीं, यह सच नहीं है......"वीलीयन ने सहमी हुई आवाज़ में कहा.

"यही सच है और मुझे शुरू से ही इस बात का अहसास था. इसलिये मैंने जो खंजर तुम्हें दिया था वह एक साधारण सा खंजर था, जादुई खंजर नहीं था. अगर तुम स्वयं ज़ोरान को चुनौती देते तो तुम्हारी बहादुरी और तुम्हारा साहस उस खंजर को जादुई खंजर बना देते. अगर तुम ज़ोरान से लड़ते हुए मारे भी जाते तो भी तुम एक वीर की मौत मरते. अब तुम एक कायर की मौत मरोगे," आर्विज़ की आवाज़ और चेहरा, दोनों ही डरावने लग रहे थे.

"नहीं, ऐसा बिलकुल नहीं है. मैं ज़ोरान को चुनौती देने की सोच ही रहा था. लेकिन तभी रेज़र ने मुझ से सहायता मांगी. रेज़र तलाविया का एक सैनिक है. ज़ोरान ने उसके साथ बहुत अन्याय किया है. रेज़र अपने अपमान का बदला लेना चाहता था. वह ज़ोरान को मारना चाहता था. उसने

मुझ से सहायता मांगी. वह मेरा मित्र बन गया था. मित्रता के कारण ही मुझे उसकी सहायता करनी पड़ी," वीलीयन ने एक झूठी कहानी सुना कर आर्विज़ को फिर से मूर्ख बनाने की कोशिश की.

"तुम कायर ही नहीं, झूठे भी हो. जो कुछ तुमने आज तक कहा और किया वह सब मुझे मालूम है. तुमने शायद देखा नहीं, नीले पंखों वाल एक पक्षी सदा तुम्हारे आस-पास रहता था. उस पक्षी को मैंने ही भेजा था. पक्षी तुम्हारी हर बात मुझे बताता रहा है. अभी भी वह उस पेड़ पर बैठा तुम्हें देख रहा है और तुम्हारी बातें सुन रहा है."

वीलीयन ने पेड़ पर बैठे पक्षी कि ओर देखा. उस पक्षी को देख वह समझ गया कि उसकी पोल खुल चुकी है.

"तुम धूर्त हो, कायर हो. तुम्हारे कुकर्मों का तुम्हें अवश्य दंड मिलेगा. तुम कायरों की भांति मरोगे," आर्विज़ को जीवन में इतना क्रोध कभी न आया था जितना क्रोध उसे वीलीयन पर आ रहा था.

वीलीयन ने कुछ कहने का प्रयास किया, परन्तु आर्विज़ वहाँ से गायब हो गया. वह कहाँ गया, कैसे गया, यह बात वीलीयन को समझ ही न आई. उसने पेड़ की ओर देखा, नीले पंखों वाल पक्षी भी वहाँ न था.

वीलीयन दुःखी और निराश था. वह तो सोचे बैठा था कि ज़ोरान को छल से मरवा कर वह अपने राजा के सामने अपने को एक महान योद्धा प्रमाणित करेगा. अपने राजा यंगहार्ज़ की प्रशंसा पायेगा. सेना में बड़ा अधिकारी बनेगा और एक दिन अपने देश की सेना का सेनापति बनेगा. परन्तु आर्विज़ ने उसके सपने चकनाचूर कर दिए थे.

अचानक उसके मन में एक शैतानी विचार आया. उसने तय किया कि वह महाराज यंगहार्ज़ को सच का पता न लगने देगा.

उसने अग्नि बाण चला दिया. यह बाण उस सेना के लिए संकेत था जो वन में छिप कर प्रतीक्षा कर रही थी. राजा के आदेश अनुसार ज़ोरान को मार कर ही उसे यह बाण चलाना

था. सेना को आदेश था कि अग्नि बाण के चलते ही तलाविया की सीमा चौकी पर आक्रमण कर दे.

वन में छिपी ब्राशिया की सेना ने आकाश में अग्नि बाण देखा. सेना तुरंत पूर्वी चौकी की ओर चल दी. रास्ते में एक जगह उन्हें वीलीयन मिला. वह पेड़ों के झुरमुट में छिप कर सेना की प्रतीक्षा कर रहा था. सेना के नायक ने पूछा, "क्या ज़ोरान मारा गया?"

"मैंने सूर्यास्त से पहले ज़ोरान से द्वंद्व युद्ध किया था, मैंने उसे बुरी तरह घायल कर दिया था. मैं उसे मारने ही वाला था कि उसके कुछ साथी बीच में आ गये. उन्होंने युद्ध रुकवा दिया और ज़ोरान को उठा कर अपने साथ ले गये."

"अगर ज़ोरान मरा नहीं है तो तुम ने अग्नि बाण क्यों चलाया? आदेश के अनुसार हमें उसके मरने के बाद ही तलाविया पर आक्रमण करना है."

"मैं जानता हूँ कि महाराज का आदेश क्या है. पर आप एक बात समझें, ज़ोरान बुरी तरह घायल है. वह लड़ाई में भाग न ले पायेगा, अगर उसने मैदान में आने का साहस कर भी

किया तो अधिक देर तक टिक न पायेगा. उसे बहुत गहरे घाव लगें हैं और उसका बहुत खून भी बह चुका है."

नायक को वीलीयन पर कुछ संदेह हुआ. उसने कहा, "तुम्हें तो कोई घाव नहीं लगा? क्या ज़ोरान तुम्हें घायल भी न कर पाया? मुझे विश्वास नहीं हो रहा."

वीलीयन ने मन ही मन अपने को कोसा. उसका ध्यान इस बात की ओर न गया था. फिर भी वह घबराया नहीं. अकड़ते हुए बोला, "मैं इतनी चतुराई से लड़ा था कि ज़ोरान मुझे छू भी न पाया. आप मेरी बात का विश्वास करो. मेरे गुप्तचरों ने बताया है कि चौकी पर इस समय अधिक सैनिक नहीं हैं. ऐसा अवसर हमें दुबारा नहीं मिलेगा. ज़ोरान बुरी तरह घायल है, सैनिक कम हैं और थोड़े निराश भी हैं. हम आसानी से इस चौकी पर विजय पा सकते हैं. हमें यह अवसर चूकना नहीं चाहिये."

नायक उसकी बातों में आ गया. उसे अहसास न हुआ कि वीलीयन अपनी सेना के साथ ही विश्वासघात कर रहा था. उसने सोचा, "अगर मैं चौकी को जीतने में सफल हो गया तो

यह एक बड़ी विजय होगी. राजा भी विजय की सूचना पाने के लिए व्यग्रता से प्रतीक्षा कर रहे हैं". उसने आक्रमण करने का निर्णय लिया.

अगले दिन सूर्य उदय होते ही ब्राशिया के सैनिकों ने हमला कर दिया. तलाविया के सैनिक आश्चर्यचकित हो गये. उन्होंने सोचा भी न था कि इस तरह अचानक चौकी पर हमला हो जाएगा.

तलाविया के सैनिक दुःखी और निराश थे. रेज़र के साथ द्वंद्व युद्ध में ज़ोरान घायल हो गया था. रेज़र तो बहुत बुरी तरह घायल हुआ था और वह तभी से बेहोश पड़ा था. डॉक्टर दोनों का इलाज कर रहे थे. परन्तु रेज़र के बचने की आशा कम ही थी.

ज़ोरान होश में था लेकिन वह युद्ध में भाग लेने की स्थिति में न था.

एक उपनायक ने कहा, "आप निश्चिंत रहें. लड़ाई के मैदान में आपके आने की कोई आवश्यकता नहीं. ब्राशिया के सैनिक कायर हैं और हम उन कायरों को पहले भी दो बार हरा

चुके हैं. आज फिर उन्हें हराएंगे. इस बार हम किसी को जीवित नहीं छोड़ेंगे. हर शत्रु सैनिक को मार डालेंगे."

लड़ाई शुरू हुई, लड़ाई के मैदान में न ज़ोरान दिखाई दिया, न ही रेज़र.

वीलीयन ने चिल्ला कर अपने नायक से कहा, "मैंने कहा था न कि ज़ोरान युद्ध में भाग न ले पायेगा. देखो, वह लड़ाई के मैदान में नहीं है. वह जीवित तो है पर आप उसे मरा हुआ ही समझें. आज हमारी जीत निश्चित है. आइये, वीरों की भांति युद्ध करें और अपनी पिछली पराजयों का बदला लें."

11

मृत्यु

ब्राशिया के सैनिक पूरी तैयारी के साथ आये थे, वह बहादुर थे और लड़-मरने को तैयार थे. जब उन्होंने युद्ध के मैदान में ज़ोरान को न देखा तो उनका उत्साह आसमान को छूने लगा. उनके भीषण हमले के आगे तलाविया के सैनिक टिक न पाये और पीछे हटने लगे.

ज़ोरान को जब सूचना मिली कि उसके सैनिक पीछे हटने लगे थे तो उसका क्रोध ज्वालामुखी समान फट पड़ा. अपने डॉक्टर की चेतावनी को ठुकरा कर वह लड़ाई के मैदान की ओर चल दिया.

डॉक्टर ने कहा था, "ज़ोरान, तुम्हारे घावों से बहुत खून बह चुका है. अब अगर तुम्हें और घाव लगे तो तुम्हारी मृत्यु निश्चित है. हमें तुम्हारी आवश्यकता है. अगर हम यह चौकी हार भी गये तो क्या? हम इस चौकी को फिर से जीत लेंगे. परन्तु अगर युद्ध में तुम्हारी मृत्यु हो गई तो हम सब पर एक भारी विपदा आ पड़ेगी."

"जब तक मैं जीवित हूँ यह चौकी उन्हें जीतने नहीं दूँगा. आप मेरे घावों को अधिक ही तूल दे रहे हैं. पिछली लड़ाई में तो मुझे इस से भी गंभीर घाव लगे थे. आप चिंता न करें मुझे कुछ न होगा. हम शत्रु को हरा कर ही लौटेंगे."

इतना कह ज़ोरान युद्ध-स्थल पहुँच गया. उसकी सेना तितर-बितर हो चुकी थी. हार निश्चित लग रही थी.

ज़ोरान ऐसा योद्धा था जो किसी भी स्थिति में हार स्वीकार करने को तैयार न था. अपने घाव और पीड़ा को भूल, एक सिंह की भांति वह लड़ाई में कूद पड़ा. उसने एक भयंकर हुंकार लगाईं और अपने साथियों से कहा, "मेरे वीर सैनिकों, तुम ने इन कायरों को कई बार मात दी है. यह लोग हमें कभी नहीं हरा सकते. विश्वास रखो, जीत हमारी ही होगी."

उसकी हुंकार सुन तलाविया के सैनिकों का उत्साह बढ़ गया. वह सब नए जोश के साथ लड़ने लगे.

ज़ोरान स्वयं इतना भीषण युद्ध कर रहा था कि ब्राशिया के सैनिकों की हिम्मत टूटने लगी. पर वह पीछे न हटे. दोनों ओर के कई सैनिक मारे गये. अनेक घायल हो गये.

तलाविया के सैनिकों की संख्या कम थी और हर पल वह संख्या घटती जा रही थी. एक समय आया जब लड़ाई के मैदान में ज़ोरान अकेला रह गया; अन्य सभी सैनिक या तो मारे गये या घायल हो गये. लेकिन भयभीत हुए बिना ज़ोरान अकेले ही ब्राशिया के सैनिकों से लड़ता रहा. वह इतना प्रचंड युद्ध कर रहा था कि अकेले होते हुए भी उसने ब्राशिया के कितने ही सैनिकों को मार गिराया. ब्राशिया का कोई भी योद्धा उस का सामना न कर पा रहा था.

ब्राशिया के सैनिक बहुत बहादुरी से लड़े पर हार गये. सब मिल कर भी ज़ोरान को हरा न पाये. अपनी जान बचाने के लिए कई सैनिक जंगल में भाग गये. जो भाग न पाये उन्होंने ज़ोरान के सामने घुटने टेक दिए.

वीलीयन चतुराई से युद्ध-स्थल से पहले ही भाग गया था. पेड़ों के पीछे छिप कर वह सब कुछ देख रहा था. अपनी सेना की हार देख कर उसे अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ.

उसने देखा की जो सैनिक जीवित बच गये थे वह सब बहुत भयभीत थे. उन्हें देख कर उसके मन में एक बात आई, "यह

सैनिक तो इतने डरे हुए हैं कि अब कभी भी ज़ोरान के साथ युद्ध न करेंगे. यह लोग तो अपने सपनों में भी ज़ोरान से डरेंगे."

उधर ज़ोरान ने एक सैनिक से कहा, "तुरंत महाराज के पास जाओ, उन्हें इस हमले की सूचना दो और कहो कि यहाँ कुछ सैनिक भेजें. ब्राशिया की सेना फिर से हमला करने का साहस न करेगी, लेकिन हमें हर स्थिति के लिए तैयार रहना होगा. महाराज को यह भी बताना कि ज़ोरान का अंत समय निकट है, मरने से पहले वह महाराज के दर्शन करना चाहता है, अगर महाराज यहाँ आ सकें तो कृपा होगी."

"आप ऐसा क्यों कहते हैं? आप को कुछ न होगा. डॉक्टर अभी आता ही होगा, आप ठीक हो जायेंगे." उस सैनिक ने कहा.

"तुम समय नष्ट न करो. डॉक्टर अपना काम करेगा. तुम अपना काम करो. देर मत करो और जाओ," ज़ोरान को बोलने में भी कठिनाई आ रही थी.

राजा को जब पता चला कि ज़ोरान गंभीर रूप से घायल है तो उन्हें बहुत दुःख हुआ. उन्होंने तुरंत अपने डॉक्टर को बुलाया. उसे साथ ले कर वह तुरंत पूर्वी चौकी आये.

वहाँ पहुँचने पर उन्हें सूचना मिली कि ज़ोरान की मृत्यु हो चुकी थी.

राजा ने ज़ोरान का शव देखा, ज़ोरान का सारा शरीर घावों से भरा हुआ था. उन घावों को देख कर अनुमान लगाया जा सकता था कि उसने कितनी भीषण लड़ाई लड़ी थी.

“इस महान योद्धा को हम प्रणाम करते है, हमें नहीं लगता कि ज़ोरान जैसा योद्धा हमें फिर मिलेगा,” राजा ने कहा.

“महाराज, मरने से पहले ज़ोरान ने कहा था कि उनकी मृत्यु की सूचना गुप्त रखी जाये. उनके माता-पिता और परिवार से भी यह बात छुपा का रखी जाये,” एक सैनिक ने महाराज से कहा.

“क्यों, ऐसा क्यों कहा था ज़ोरान ने?” राजा ने पूछा.

“ज़ोरान ने कहा था कि इस भीषण युद्ध के बाद शत्रु सपनों में भी उनसे डरेंगे. वह कभी भी हमारे देश पर हमला करने का साहस न करेंगे. परन्तु अगर शत्रु को पता चल गया कि ज़ोरान लड़ाई में मारे गए हैं तो शत्रु का डर जाता रहेगा और उनके सैनिक उत्साहित हो जायेंगे. लेकिन अगर मृत्यु की सूचना उन्हें नहीं मिलती तो वह वर्षों तक ज़ोरान से डर कर रहेंगे और हमारे देश पर हमला करने का दु: साहस न करेंगे.”

“लेकिन कभी न कभी तो यह बात उन्हें पता लग ही जायेगी,” राजा ने कहा.

“ज़ोरान ने कहा था कि उनकी एक मूर्ति बना कर चौकी के निकट लगा दिया जाये. शत्रु उस मूर्ति को देख कर समझेंगे कि ज़ोरान जीवित हैं और स्वयं सीमा की निगरानी कर रहे हैं,” सैनिक ने उत्तर दिया.

****

12

मूर्ति

जब राजा और वह सैनिक बातें कर रहे थे, डॉक्टर ज़ोरान के शव की जांच कर रहा था. डॉक्टर ने कहा, "महाराज, हमें ज़ोरान की अंतिम इच्छा पूरी करनी चाहिये. अब अगर आप अनुमति दें तो मैं ज़ोरान को अपने अस्पताल ले जाना चाहूँगा."

"इसका अंतिम संस्कार चुपके से लेकिन पूरे सम्मान के साथ किया जायेगा," राजा ने आदेश दिया.

डॉक्टर ने सर हिला कर हामी भरी. राजमहल पहुँच कर राजा ने देश के सबसे प्रसिद्ध मूर्तिकार को बुलाया और कहा, "तुरंत ज़ोरान की मूर्ति बनाओ, पत्थर की मूर्ति. मूर्ति ऐसी होनी चाहिये कि देखने वालों को लगे कि वह मूर्ति को नहीं, स्वयं ज़ोरान को देख रहे हैं. अपनी कला का भरपूर प्रदर्शन करो और एक सजीव मूर्ति बनाओ, इस कार्य में बिलकुल देरी नहीं होनी चाहिए."

मूर्तिकार ने राजा को निराश न किया. जो मूर्ति उसने बनाई उसे देख कर स्वयं राजा भी दंग रह गये. उन्हें लगा कि जैसे ज़ोरान ही उनके सामने खड़ा था और अभी उनसे बात करने लगेगा.

राजा ने मूर्तिकार की खूब प्रशंसा की और उसे पुरस्कार भी दिया. उस मूर्ति को पूर्वी चौकी के निकट स्थापित कर दिया गया. जो कोई भी उधर से आता-जाता उसे लगता कि ज़ोरान स्वयं चौकी के निकट खड़ा सीमा की निगरानी कर रहा था.

ब्राशिया के गुप्तचर भी धोखा खा गये. वह भी समझे की ज़ोरान के घाव ठीक हो गये थे और वह स्वयं सीमा की निगरानी करने लगा था. गुप्तचरों ने अपने राजा को सूचना दी. ब्राशिया के राजा का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया. वह समझ गया की वीलीयन ने उससे झूठ कहा था.

लड़ाई के बाद वीलीयन ने कहा था कि ज़ोरान गंभीर रूप से घायल था और वह बच न पायेगा. फिर कुछ दिनों के बाद उसने राजा यंगहाज़ से कहा था, "महाराज, कुछ चरवाहे मेरे

लिए तलाविया में जासूसी करते हैं, उन्होंने सूचना भिजवाई है कि ज़ोरान मर गया है. तलाविया के राजा स्वयं अपने डॉक्टर के साथ पूर्वी चौकी आये थे. परन्तु उनके पहुँचने से पहले ही ज़ोरान की मृत्यु हो चुकी थी."

लेकिन जब ब्राशिया के राजा को पता चला कि ज़ोरान जीवित था और सीमा की निगरानी कर रहा था तो उसका गुस्सा फूट पड़ा. राजा यंगहार्ज़ के आदेश पर वीलीयन को कैद कर लिया गया. राजा ने उसे मृत्युदंड देने का आदेश दिया.

वीलीयन रोने लगा. राजा से दया की भीख मांगने लगा. पर उसके आंसू देख कर भी राजा का क्रोध कम न हुआ.

फिर कुछ सोच कर राजा ने कहा, "मैं तुम्हें एक शर्त पर क्षमा कर सकता हूँ. तुम पूर्वी चौकी जाओ और पता लगाओ कि ज़ोरान जीवित है या मर चुका है. अगर वह जीवित है तो तुम उसे द्वंद्व युद्ध लड़ने के लिए चुनौती दो और उससे द्वंद्व युद्ध लड़ो."

वीलीयन ने झट से राजा की शर्त मान ली. ज़ोरान से लड़ने का उसका कोई इरादा न था. वह तो तलाविया की ओर जाने

वाला भी न था. सिर्फ मृत्युदंड से बचने के लिए उसने राजा का आदेश मान लिया था. उसे तो बस ब्राशिया से भाग जाने का एक अवसर चाहिए था.

“यह मत सोचना कि तुम इस बार चकमा दे पाओगे. नीले पंखों वाला पक्षी हर पल तुम पर निगरानी रखेगा और तुम्हारी हर बात, तुम्हारे हर काम की हमें सूचना देता रहेगा. अगर तुम ने इस बार कोई चाल चली तो तुम्हारी मृत्यु निश्चित है,” ब्राशिया के राजा यंगहार्ज़ ने क्रोध से कहा.

वीलीयन बुरी तरह डर गया. उसे पता न था कि अब जादूगर आर्विज़ राजा की सहायता कर रहा था. वीलीयन समझ गया कि इस बार वह बुरी तरह फंस गया था. वह बच कर भाग न सकता था. राजा के आदेश का पालन करने के अतिरिक्त उसके पास कोई उपाय न था.

वीलीयन तलाविया की पूर्वी चौकी आया. चौकी के निकट स्थित चाँद सराय में ही ठहरा. इस बार भी उसने एक सौदागर का भेष बना रखा था. वह सोच रहा था कि शायद रेज़र शराब पीने के लिए सराय में कभी आये; वह फिर से

उसे फुसलाने का प्रयास करना चाहता था. परन्तु तलाविया का कोई भी सैनिक अब उस सराय में नहीं आता था.

दिन बीत रहे थे. नीले पंखों वाला पक्षी सदा रेज़र के आस-पास ही रहता था. वह पक्षी कब आता और कब जाता, वीलीयन कभी न जान पाया.

जब वीलीयन को कोई रास्ता न सुझाई दिया तो उसने एक लालची चरवाहे को पैसों का लालच दे कर पूर्वी चौकी की जासूसी करने के लिये तैयार कर लिया. चरवाहे ने बहुत प्रयास किया, परन्तु उसे कोई जानकारी न मिली.

"ज़ोरान स्वयं सीमा की निगरानी क्यों करता है? वह तो चौकी का नायक है. एक नायक क्यों हर समय सीमा पर खड़ा रहता है? कोई रहस्य है इस में. हमें इसका पता लगाना ही है. कुछ दिन उस पर कड़ी नज़र रखो," वीलीयन ने चरवाहे से कहा.

कुछ दिनों के बाद उस चरवाहे ने बताया कि सीमा की निगरानी ज़ोरान नहीं करता. जिसे सब ज़ोरान समझते थे वह तो पत्थर की मूर्ति थी.

“ज़ोरान तो कब का मर चुका है. आप लोगों को मूर्ख बनाने के लिए एक पत्थर की मूर्ति बनवा कर चौकी के निकट स्थापित कर दी गई है. सब उस मूर्ति को देख कर समझते हैं कि ज़ोरान जीवित है और स्वयं सीमा की रक्षा कर रहा है.”

“यह जानकारी तुम्हें कहाँ से मिली?” वीलीयन ने पूछा.

“उनकी सेना का एक सैनिक है जिसे शराब पीने की आदत है. इस कारण चौकी के नए नायक ने उसे सेना से निकाल दिया है, वह सब जानता है. उसी ने मुझे यह रहस्य बताया है.”

****

13

पत्थर का योद्धा

कुछ भी करने से पहले वीलीयन इस सूचना को अच्छी तरह से परख लेना चाहता था. वह स्वयं जांच करने निकला. उसने पूरी सावधानी से काम किया. बड़ी चालाकी से वह उस जगह आया जहाँ ज़ोरान खड़ा सीमा की निगरानी कर रहा था. निकट आने में उसे डर लग रहा था, पर जान हथेली पर रख वह पास आया. जब उसने ज़ोरान को छुआ तो उसकी ख़ुशी का ठिकाना न रहा. वहाँ ज़ोरान नहीं था, एक पत्थर की मूर्ति थी.

प्रसन्नता से वह झूम उठा. उसने तुरंत वापस लौट अपने राजा को यह सूचना देने की बात सोची. लेकिन वह इस बात से अंजान था कि तलाविया के बिछाए हुए जाल में वह फंस गया था.

"महाराज, ज़ोरान मर चुका है. मैंने तो पहले ही यह सूचना आपको दे दी थी. यह सूचना मेरे गुप्तचर ने मुझे दी थी. मैंने उसकी बात का विश्वास नहीं किया और स्वयं इस बात की

जाँच की. वहाँ सीमा पर एक मूर्ति खड़ी है, ज़ोरान नहीं. मैंने मूर्ति छू कर देखी. वह पत्थर की है. ज़ोरान नहीं, पत्थर का योद्धा उनकी सीमा की रक्षा कर रहा है."

"तुम्हारा क्या सुझाव है?" राजा ने पूछा.

"महाराज, मुझे पता लगा है कि ज़ोरान की मृत्यु से तलाविया सेना घबराई हुई है. सेना का साहस बढ़ाने के लिए ही तलाविया के राजा ने हमें भ्रमित करने के लिए सीमा पर ज़ोरान की मूर्ति स्थापित करवाई है. यह एक चाल है और हम उनकी चाल में फंस गये. मेरे विचार में यही समय है जब हम उन्हें हरा सकते हैं और उनसे बदला ले सकते हैं," वीलीयन ने बड़े आत्मविश्वास के साथ ने राजा से कहा.

राजा कुछ सोच कर बोले, "हम हमला करेंगे, परन्तु इस बार हम बड़ी सेना नहीं भेजेंगे. तुम दो सौ सैनिक ले कर जाओ और उनकी पूर्वी चौकी पर दावा बोलो."

वीलीयन इतने कम सैनिकों के साथ हमला करने से घबरा रहा था, परन्तु इस स्थिति से बचने का कोई उपाय उसे सुझाई न दे रहा था. दो सौ सैनिकों के साथ वह पूर्वी चौकी

आ पहुँचा. सब निकट के जंगल में छिप गये. सैनिकों ने ज़ोरान की मूर्ति को देखा. एक सैनिक बोला, "यह ज़ोरान ही है, वह जीवित है. वह सीमा चौकी की रक्षा कर रहा है. हम उससे युद्ध नहीं कर सकते."

"मूर्खों की तरह बात मत करो. ध्यान से देखो, वह कोई आदमी नहीं है, एक मूर्ति है. ज़ोरान मर चुका है," वीलीयन ने चिल्ला कर कहा.

पर उसके सैनिकों को विश्वास न हुआ. वह युद्ध करने से कतराने लगे.

"दो लोग मेरे साथ आओ. मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि सच क्या है," वीलीयन ने कहा.

दो सिपाही साथ लेकर वीलीयन ज़ोरान की मूर्ति के निकट आया. सिपाहियों ने मूर्ति की स्वयं जांच की.

"अरे, यह तो सच में पत्थर की एक मूर्ति है, ज़ोरान नहीं. ज़ोरान मर चुका है," एक ने कहा.

“अब हमें किसी का भय नहीं, अब हमें कोई भय नहीं. हम इन कायरों को युद्ध में हरा देंगे. अवश्य ही विजय हमारी होगी. अगर उनकी चौकी पर हज़ार सैनिक भी हुए तब भी हम ही जीतेंगे.” दूसरे ने कहा.

ब्राशिया के सैनिकों ने पूर्वी चौकी पर दावा बोल दिया. हमला अचानक हुआ था पर तलाविया के सैनिक इस आक्रमण के लिए तैयार थे. भीषण लड़ाई हुई. दोनों ओर के सैनिक पूरे उत्साह से लड़ रहे थे. कोई भी एक इंच पीछे हटने को तैयार न था.

तभी ब्राशिया के एक सैनिक ने ज़ोरान को अपने सामने खड़ा पाया. ज़ोरान का युद्ध-वेश बहुत ही शानदार और प्रभावशाली था. उसका चेहरा पत्थर की तरह कठोर था. उसकी आँखें क्रोध से लाल थीं. ब्राशिया के उस सैनिक के होश उड़ गये.

उसने उस ओर देखा जहाँ ज़ोरान की मूर्ति लगी थी. मूर्ति गायब थी. सैनिक को समझ न आया कि यह चमत्कार कैसे हुआ था. उसे लगा कि किसी जादुई शक्ति से मूर्ति जीवित

हो गई थी. भय से वह सैनिक चिल्लाया, “पत्थर की मूर्ति लड़ने आ गई है.”

ब्राशिया के कई सैनिकों ने अपने उस साथी की ओर देखा. उन सब ने ज़ोरान को युद्धस्थल में पाया. सभी ने एक साथ ज़ोरान की मूर्ति की ओर देखा. सभी ने देखा कि मूर्ति अपनी जगह से गायब हो गई थी. सभी ने समझा कि किसी जादुई शक्ति से मूर्ति जीवित हो गई थी. सभी भयभीत हो गये.

ज़ोरान ने शत्रु सैनिकों पर भयंकर हमला किया. देखते ही देखते सब तितर-बितर हो गये. कई मारे गये थे, कई बुरी तरह घायल हुए थे. सब अपनी जान बचाने को यहाँ-वहाँ भागने लगे.

भागते हुए कुछ सैनिकों ने पीछे मुड़ कर देखा. ज़ोरान की मूर्ति तो अपनी जगह ही स्थापित थी. सब भौचक्के रह गये. उन्हें समझ ही न आया कि क्या हुआ था.

“लगता है मृत्यु के बाद ज़ोरान एक पत्थर का योद्धा बन गया है. जब हमने चौकी पर हमला किया तब वह पत्थर की

मूर्ति था, फिर अचानक जीवित होकर वह युद्ध स्थल में आ गया और हम से लड़ने लगा." एक सैनिक ने कहा.

"हमारे वहाँ से भागते ही वह फिर पत्थर की मूर्ति बन गया है. परन्तु पत्थर की कोई मूर्ति जीवित कैसे सकती है?" दूसरे सैनिक ने कहा.

"अवश्य ही किसी जादुई शक्ति से ऐसा हो रहा है," तीसरे सैनिक ने कहा.

"अवश्य ही कोई जादूगर उनकी सहायता कर रहा है," पहले ने कहा.

"कोई मनुष्य नहीं, पत्थर का योद्धा हम से लड़ रहा था," दूसरा चिल्लाया.

"ऐसे पत्थर के योद्धा को हराना असंभव है," तीसरे ने कहा.

चारों ओर यह बात फ़ैल गई कि मृत्यु के बाद ज़ोरान एक पत्थर का योद्धा बन गया था.

ब्राशिया के राजा यंगहार्ज़ को इस कहानी पर विश्वास न हुआ. उसने चिल्ला कर अपने सैनिकों से कहा, "तुम सब

हार कर आये हो और अब मुझे एक मनगढ़ंत कहानी सुना रहे हो. क्या कोई आदमी पत्थर की मूर्ति बन सकता है? क्या कोई पत्थर की मूर्ति आदमी बन सकती है? क्या पत्थर की मूर्ति युद्ध कर सकती है? तुम सब कायर हो, तुम सब को मृत्यु दंड मिलेगा."

लेकिन जब हर सैनिक ने वही कहानी सुनाई तो उसे कुछ संदेह होने लगा. गुस्से से पागल राजा यंगहार्ज़ ने तय किया कि वह स्वयं हमला करेगा. दो हज़ार सौ चुने हुए सैनिकों के साथ राजा पूर्वी चौकी की ओर आया.

चौकी के दक्षिण में जो वन था उस वन में सेना ने अपना शिविर बनाया. राजा ने अपने दो विश्वस्त गुप्तचर सारी जानकारी प्राप्त करने के लिए भेजे.

अगले दिन गुप्तचरों ने बताया की तलाविया की चौकी में दो-तीन सौ सैनिक ही थे, ज़ोरान चौकी में न था, उसकी मृत्यु हो चुकी थी. चौकी के निकट पत्थर की मूर्ति लगी थी.

"महाराज, हम ने पूरी तरह जांच कर ली है. तलाविया वालों ने पत्थर की मूर्ति वहाँ स्थापित कर रखी है. मूर्ति इतनी

अच्छी बनी है कि उसे देख कर हर किसी को भ्रम हो जाता है कि स्वयं ज़ोरान वहाँ खड़ा है और सीमा की निगरानी कर रहा है. वह पत्थर की मूर्ति कभी जीवित नहीं हो सकती. न ही वह मूर्ति वहाँ से हटाई जा सकती है. ऐसा लगता है कि तलाविया वालों ने पिछली लड़ाई में कोई छल किया होगा. हमारे सैनिकों को लगा होगा कि मूर्ति जीवित हो कर युद्ध करने लगी थी. यह अवश्य ही शत्रु की कोई चाल थी. हमारे सैनिक उनकी चाल में फंस गये और डर कर मैदान छोड़ कर भाग खड़े हुए. अब सच हमारे सामने है. हमारी संख्या अधिक है. हमारे सैनिक बहादुर हैं और तलाविया से बदला लेने को आतुर हैं. हमारी जीत निश्चित है."

****

14

महान योद्धा

ब्राशिया का राजा प्रसन्नता से मुस्कराया. उसने कहा, "कल सूर्य उदय होते ही हम आक्रमण करेंगे और विजयी हो कर लौटेंगे."

युद्ध शुरू हुआ. तलाविया की सेना युद्ध के लिए पूरी तरह तैयार थी. चौकी की नायक को गुप्तचरों से पहले ही सूचना मिल चुकी थी कि ब्राशिया के सेना निकट के वन में छिपी हुई थी. उसे इस बात की ज़रा भी चिंता न थी कि शत्रु की सेना बड़ी थी और ब्राशिया का राजा स्वयं युद्ध करने आया था. तलाविया के सेना ने बहादुरी से शत्रु का सामना किया.

राजा यंगहार्ज़ के आदेश पर ब्राशिया के दोनों गुप्तचर ज़ोरान की मूर्ति पर अपने आँखें गड़ाए बैठे थे. उनको आदेश था कि लड़ाई के दौरान अगर मूर्ति गायब हो गई तो राजा को तुरंत सूचित किया जाये. दोनों गुप्तचर पूरी तरह सतर्क थे और बिना पलकें झपकाये मूर्ति को देख रहे थे.

लड़ाई के मैदान में भीषण युद्ध हो रहा था. अचानक एक भयंकर हुंकार की आवाज़ आई. भयभीत होकर दोनों गुप्तचरों ने एक साथ लड़ाई के मैदान की ओर देखा. पर अगले ही पल उन्होंने अपनी आँखें ज़ोरान की मूर्ति की ओर घूमा दीं. मूर्ति अपनी जगह पर न थी, वह लुप्त हो चुकी थी.

ब्राशिया के सैनिकों ने अचानक ज़ोरान को युद्ध के मैदान में पाया. अपने शानदार युद्ध-वेश में वह बहुत ही भयानक लगा रहा था. युद्ध स्थल में प्रगट होते ही उसने एक ज़ोर की हुंकार लगाईं थी; ऐसी हुंकार जिसे सुन कर बहादुर से बहादुर सैनिक का खून भी डर से जम गया था.

ब्राशिया के कई सैनिकों ने उस ओर देखा जहाँ ज़ोरान की मूर्ति खड़ी थी. सब ने देखा कि मूर्ति गायब थी. सब भयभीत हो गये. उन्हें विश्वास ही गया की पत्थर की मूर्ति जीवित होकर युद्ध करने के लिए युद्ध-स्थल आ गई थी. वह सब भयभीत हो गये.

पत्थर का योद्धा उन पर टूट पड़ा. एक विशाल मस्त हाथी की तरह वह युद्ध के मैदान में घूम रहा था और शत्रु सैनिकों

को कुचलता जा रहा था. कितने ही सैनिक घायल हो गये, कितने ही मारे गये. एक ही वार से वह बड़े से बड़े योद्धा को ऐसे मार गिरता था जैसे कि वह कागज़ की कठपुतली हो. ब्राशिया के सैनिक युद्ध स्थल से भागने लगे.

"मार डालेगा, पत्थर का योद्धा सब को मार डालेगा, भागो-भागो, अपनी जान बचाओ," ब्राशिया के सैनिक चिल्ला-चिल्ला कर एक-दूसरे को कह रहे थे.

ब्राशिया के राजा ने सैनिकों को पुकार कर कहा, "रुको, कायरों की तरह मत भागो. लौट आओ और वीरों की भांति युद्ध करो. तुम सब महान योद्धा हो, तुम ने कितनी युद्ध लड़े और जीते हैं. आगे आओ और महान वीरों के समान युद्ध करो."

"महाराज, हम मनुष्यों से लड़ सकते हैं, परन्तु हम एक पत्थर के योद्धा से नहीं लड़ सकते. हम न उसे घायल कर सकते हैं, न ही मार सकते हैं. पत्थर के योद्धा से लड़ना पागलपन है," एक सैनिक ने चिल्ला कर राजा से कहा.

लड़ाई के मैदान में भगदड़ मच गई. जो जिधर भाग सकता था उधर भाग गया. तलाविया की सेना जीत गई. सारे देश में इस जीत का जश्न मनाया गया.

तलाविया के राजा ने हर सैनिक का स्वयं सम्मान किया, पत्थर के योद्धा का भी राजा ने सम्मान किया.

"महाराज, आपने मुझे तलाविया का एक गुप्त शस्त्र बना दिया है. हर कोई मुझ से डरता है. पर इससे मुझे कोई प्रसन्नता नहीं मिलती. मैं तो एक साधारण सैनिक हूँ और एक साधारण सैनिक की भांति युद्ध में भाग लेना चाहता हूँ," पत्थर के योद्धा ने कहा, वह कोई और नहीं ज़ोरान ही था.

"ज़ोरान, मैं तुम्हारी बात समझता हूँ. पर हमें लगता है कि अब लंबे समय तक हमें कोई लड़ाई लड़नी ही न पड़ेगी. गुप्तचरों से सूचना मिली है कि हर कोई पत्थर के योद्धा से भयभीत है. कोई भी पत्थर के योद्धा का सामना नहीं करना चाहता. हमारा विश्वास है कि अब कोई हमारे देश पर

आक्रमण करने का साहस नहीं करेगा. चारों ओर शान्ति रहेगी."

फिर राजा ने पास खड़े अपने डॉक्टर से कहा, "हम तो समझते थे की आप सिर्फ एक अच्छे डॉक्टर हैं. आपने ज़ोरान को बचा कर चमत्कार तो किया ही लेकिन पत्थर के योद्धा की योजना बना कर आपने उससे भी बड़ा चमत्कार कर दिया है."

राजा के डॉक्टर ने ही पत्थर के योद्धा की बात सोची थी. सब यही समझ रहे थे कि ज़ोरान की युद्धस्थल में मृत्यु हो गई थी. लेकिन डॉक्टर ने जांच कर पाया था कि ज़ोरान जीवित था, अनेक घावों और बहुत सारा खून बह जाने के कारण वह गहरी बेहोशी में था. उसका इलाज करने के लिए डॉक्टर उसे अपने अस्पताल ले आया था.

कोई न जान पाया था कि ज़ोरान जीवित था और उसका इलाज हो रहा था. शीघ्र ही उसके घाव ठीक होने लगे थे. परन्तु उसके स्वस्थ होने की बात गुप्त रखी गई थी.

उधर सीमा पर ज़ोरान की मूर्ति स्थापित कर दी गई. राज्य के गुप्तचरों ने हर ओर यह बात फैला दी कि ज़ोरान मर चुका था. लेकिन कुछ गुप्तचर यह बात भी फैला रहे थे कि ज़ोरान जीवित था और स्वयं सीमा की निगरानी कर रहा था. तलाविया के शत्रु समझ न पा रहे थे की सच क्या था.

जहाँ ज़ोरान की मूर्ति लगाई गई थी वहाँ मूर्ति के नीचे, एक गुप्त तहखाना था. तहखाने में एक यंत्र रखा हुआ था. उस यंत्र द्वारा मूर्ति को नीचे तहखाने में छिपाया जा सकता था. मूर्ति के गायब होते ही ज़ोरान युद्ध-स्थल पर प्रगट हो जाता था.

शत्रु सैनिक समझते थे कि किसी जादुई शक्ति से मूर्ति जीवित ही गई थी और उनसे लड़ रही थी. हर बार शत्रु सैनिकों ने समझा था कि पत्थर का योद्धा उन से लड़ रहा था. कोई भी पत्थर के योद्धा का सामना न कर पाया था.

"आपकी योजना बहुत सफल रही, पत्थर के योद्धा ने सभी शत्रुओं को इतना भयभीत कर दिया है कि अब कोई भी हम

पर हमला करने का साहस न करेगा," राजा ने अपने डॉक्टर से कहा.

फिर ज़ोरान की पीठ थपथपाते हुए राजा ने कहा, "ज़ोरान तुम एक महान योद्धा हो. हमें तुम पर गर्व है."

"महाराज, अब मेरे लिए क्या आदेश है? ज़ोरान ने पूछा.

"अपने माता-पिता के पास जाओ. वह भी समझे बैठें हैं कि तुम्हारी मृत्यु हो चुकी है, उनके पास जाओ, उनके साथ रहो. अगर कभी हमें तुम्हारी आवश्यकता हुई तो हम तुम्हें बुला लेंगे. लेकिन तुम जब भी युद्ध के मैदान में जाओगे तो पत्थर का योद्धा बन कर ही जाओगे."

राजा ने उसे बहुत सारा धन और कई उपहार दिए. उसे देख कर उसके माता-पिता अपने आँसू रोक न पाए.

ब्राशिया के राजा को बंधी बना लिया गया था. जब उसने आश्वासन दिया कि तलाविया के प्रति अपनी शत्रुता त्याग देगा. तलाविया के राजा ने उसे उसका राज्य लौटा दिया.

वर्षों तक किसी भी शत्रु ने तलाविया पर आक्रमण न किया, हर कोई पत्थर के योद्धा से डरता जो था.

(समाप्त)